श्रीहरि

(23)

१ सुंदर तिलक भाल बेसर जड़ित लाल हीरा न
सिस सोहे क्रिट भाल है।। स्याम रंग बूटी दार बे
अति सोभात है लाड़ीले रसिक संग सोभित
चाल है।। आंनद के कंद बेनु गहे चार कमल पान
नुपुर कानिक पग जेहर रसाल है।। मनको हर
न हार सब सुख के कर्म हार तारो मे चंद्र
जैसे राजत श्री गोपाल है।।

२ सवैया

नलनी बिच बीच ओर कर जुग फोर
जु हाक उडे बिनही को।। बिब चुंबक चोर
कोमल नयो फिर दुसरो रुप दिखावही को।।
कांचे शिशु सनेह को बान यही बिधु रे
जल मिन जिवाय है को गुनवार
गोपाल कि आंखिन सो उरमी अखि
या सुरमा वही को

SKM/655/96

...गोकुल

वसवश्रीगंगाजलहिहोईजुदेरहेतवताई।तनके
गुनदोषकहैजोई॥मिलेपाछैंतोगंगाजलहिंजो
निकेमाध्येपरिधरिये॥एसेंश्रीरहूजेजीवहैंतिन
कोंजववैस्नववैस्नवकोसंगहोइ॥औरतनके
संगतें॥भगवतचरणामृततुलसीदलमहाप्रसा
दपाव॥तवतनकीबुद्धिनिर्मलहोइवैस्नवहोइ
करिश्रीभगवानकीसेवाकरैं।तोवेकृतार्थहोइ
गे।याहीतेंतुम्हारेजेजीवसरनागतिहोइ।तिन
कोंतुमब्रह्मसंबंधकरवाइकेअंगीकारकरो।याही
तेंसबदोषतनकेदूरिहोइगे।सेवाजोएजीवहोंइगे
औरमैंतनजीवनकोंकृतार्थकरूंगो॥यहश्रीआज्ञाश्री
कृष्णजूआपप्रगटहोइकैं॥श्रीआचार्यजीसोंक
है॥तवश्रीआचार्यजीनमार्गप्रगटकीनो।यहयाग्रं
थमेंसिद्धांतभयो॥इतिश्रीवल्लभाचार्यविरचितं
सिद्धांतरहस्यविविरणंसंपूर्णं॥श्रीगोपीजनवल्ल
भायनमः॥सर्वोत्तमटीकालिख्यते॥श्रीगुसांईजी
श्रीआचार्यजीकेअष्टोत्तरसतनामजानीतरहैं।ए
सोसर्वोत्तमग्रंथताकोनिरूपणकरतहैं।ताकीटी
काश्रीगोकुलनाथजीकरतहै॥श्लोक॥नत्वापि
तृपदांभोजं।सर्वानिष्टप्रदायकं।नत्वाआचार्यनाम
नि।विवरष्येयथामति॥याकोअर्थ॥श्रीगोकुल

१ नाथजी कहत हैं । हम श्री गुसांईजी के चरणार
विंद कहं नमस्कार करत हैं । कैसे हैं चरणारवि
दंन कूं नकहें । इहलोक संबंधी जो वस्तु स्त्री पुत्र ध
नादिक । और परलोक संबंधी वस्तु कहां जा तें
परलोक की सिद्धि होइ । ता सब के देनवारे एसे च
रणारविंदन कूं नमस्कार करि श्री गुसांईजी
कहे जो । श्री आचार्यजी के नाम में तिन कहें
मजेसी बुद्धि हे ताको निटीका करत हैं ॥ श्लोक
यद्यपि योग एवाहं । तन्नाम विहलौ स्वत । स्वीयत्वे
नैव कृपया योग्यतां मयि द्रास्यति । २ । इति विस्वास
तो नूनं । प्रवृत्तोहं न चान्यथा ॥ अनस्त एव शरणं म
म सर्वार्थ सिद्धये ॥ याको अर्थ ॥ श्री गोकुलनाथ
जी कहत हैं । यद्यपि श्री आचार्यजी के नाम न की
जो टीका करनी ता में आपुन ते तो मो में योग्यता
नहीं । परि श्री आचार्यजी के मो कुं है आपनो जानि
कें कृपा करि के मो कहं आपने नाम की टीका क
रिवे कह योग्यता देहू । या विस्वास तें में टीका करि
वे में प्रवर्त्त भयो हूं । अन्यथा नहीं । तातें श्री आचार्य
जी के चरणारविंद मो कहं शरण हे । सब वस्तु के
सिद्धि होइवे विषे । अब कहत हें । श्री गुसांईजी । १८
श्री आचार्यजी अलौकिक नाम प्रगट करिवे कें
के

लीयें॥ औरश्रीआचार्यजीकोस्वरूप। औरस्व
रूपकेप्रागट्यविखैंकारणकहिवेकेंलीयेंपहि
लेंपुरुषोत्तमस्वरूपकीस्तुतितीनश्लोकनक
रिकहतहैं। तहांपूर्णपुरुषोत्तमकेसेहैं। श्रीआ
चार्यजीकरिप्रगटकीयोजोभक्तिमार्गताविषें
जोनिरूपणकरियतुहैं॥ औरश्रीभगवतगी
ताआदिदेकेंजोअनेकअलौकिकप्रमाणति
नकरिजिनकोनिरूपणकरियतुहै॥ औरश्री
लो आचार्यजीकेस्वरूपकेंहैंभूतलनूतंजिनकेमु श्रो रजी
खारविंदरूपश्रीआचार्यजीहै॥ एसेंपूर्णपुरुषो
त्तमकीस्तुतितीनश्लोकनकरिकरतहैं। मंग
लकेंलीये॥ श्लोक॥ प्राकृतधर्मानाश्रयमप्राकृ
तनिखिलधर्मरूपमिति। निगमप्रतिपाद्यंयत्
च्छुद्धंसाकृतंस्तौमि॥ याकोअर्थ॥ श्रीठाकुरके
सेहैंप्राकृतधर्म। जेसत्वगुण। रजोगुण। तमोगुण
तिनकरिरहितहैं। कजानिककोईकहैतोनिरा
कारहोइगे। तहांकहतहैंनहीं अप्राकृतजेअलौ
किकआनंदमयदेहइंद्रियादिकतिनकरिसहि
तहैं। औरयाभांतिवेदहूनिरूपणकरतहैं। शुद्धआ
नंदःमात्रकरयादमुखोद[illegible]रादिसाकारन
तुनिराकारतासेंपूर्णपुरुषोत्तमकीहमस्तुतिकरत

है [illegible]
[illegible] तहांयह पूर्वपक्ष होइ जो
एसो स्वरूप औरकों दूंनकों येसो क्यों । तहां पंडितनके
अज्ञानविषैं कारण कहत हैं ॥ श्लोक ॥ कलिका
लतमः छन्नदृष्टित्वाद्विडसामपि संप्रति विस्मयस्व
स्य महा[illegible] समनद्भुवि ॥ याको अर्थ ॥ कलिकाल
विषैं अज्ञानरूपी जो अंधकार ताकरि पंडीतनकी
दृष्टि छाय रही है । तातें पंडितनकहै श्रीभागवत
वेदद्रुमकरि जिनकों निरूपण करियतु है । ऐसे
जो पूर्ण पुरुषोत्तम तिनकौ महात्म्य जान्यो नहीं
जात । कौन भांति जैसें अंधकारकरि ढांपी जो दृष्टि
ताकरि वस्तुकों ज्ञान न होइ । सो काहेतें पंडितन
कहैं कहा ज्ञान नहीं । यातें त्रैलोकमैं स्थित हैं पुरु
षोत्तमस्वरूप तो वै कुंठमें स्थित हैं । तातें उनकौ
ज्ञान हैं ॥ तहां यह पूर्वपक्ष जो तुम्हारे रूप भागवत
तोमैं ज्ञान है गकुर वांय हसंदेह होइ । सो हरिक
रि विकहे ॥ आपुन कहै जो ज्ञान है तहां प्रकार कह
त हैं ॥ श्लोक ॥ दयया निजमाहात्म्यं करिष्यं प्रक
टहरिः ॥ वाण्या यदा तदा स्वास्य । प्रादुर्भूतं चकार हि ॥
॥ याको अर्थ ॥ गकुर कबहू एक अति दया करि
अपनो जो माहात्म्य कै सो पुष्टिमार्गी प्रजेव ... क

तिनसोंजेलीलातातिविखैरसात्मकभावरू
पऔरकाहूसोंजांन्योनजाय। ऐसोजोमाहा
त्म्यसोअपनेवचनद्वारासेवकनकेलीयें
प्रगटकरिवेकीजवइछाभई। तवअपने
मुखारविंदरूपजोश्रीआचार्यजीतिनतीन
रअपनेसवधर्मप्रगट[illegible]कीयें। तहांय
हपूर्वपक्षहोंइतनोठाकुरकहकरिवेको
कहाप्रयोजन। तहांकहतहैंठाकुर[illegible]के
सेहे। अपनेसेवकनकेदुःख। हरिकरनवा
रेहैं। तातेंजोअपनेमुखारविंदरूपजोश्री
आचार्यजीतिनको[illegible]जोप्रागट्यनकरैं
तोपुष्टीमार्गीयठाकुरकेस्वरूपकोज्ञानका
हूकहनहोतो। तोसेवकनकहदुःहोतो। जो
पुष्टीमार्गीभगवत्स्वरूपकोज्ञानेनहीं। ठा
कुरतवहरि[illegible]नकहवावते। तातेंआपुनजा
नितिहरिकहवावेहीताकेलीयेश्रीआचा
र्यजीहमकहजताए। तातेंहमकहठाकुर
केस्वरूपकोमहात्म्यज्ञानभयो। यातेंतिन्ह
पने[illegible]नविखेंकारणकहे। यातेंतिनठाकुर
विषयतीनश्लोककहि। अबश्रीआचार्य
जीविखेयश्लोककहतहैं। श्रीआचार्यजीके

श्लोक॥ नदुकृमपि दु[illegible]थं सुवेधं स्याद्यथा नथा
[illegible]

मेहैं।सत्वगुण।रजोगुण।तमोगुणतिनक।
रिरहितहैं।याहीभांतिसोश्रीआचार्यजीक
हवेकूंकहततहे।सोकोनभांति।वेदस्तुरूपो
त्तमस्वरूपकहसाकारअलौकिकआका
रसहितनिरूपणकरततहे।सोमुखारविंद
रूपजोश्रीआचार्यजीतिनकूंकोनिरूपण
करततहे।एसेसाकारआनंदमात्रकरपादमु
खोदरादिरूपएसेश्रीआचार्यजीतिनकीस्तु
तिकरतहे [illegible] स्वरूप [illegible] जोश्रीआ
चार्यजीतिनकी [illegible] करतहे [illegible] यहस्व
रूपहे [illegible] श्री [illegible] चार्यजीकोस्वरूप [illegible]
भांतिनिरूपणकरतहो [illegible] भांति [illegible] कोई
[illegible] ज्ञान [illegible] करतहे [illegible]
[illegible] आचार्यजीको [illegible]
[illegible] श्रीआचार्यजी [illegible] स्वरूपको [illegible] ज्ञानहे [illegible]

हां कहत हैं । हम कहूं तो पूर्णपुरुषोत्तम कृपा क
रिकै अपने वचन द्वारा अपनो माहात्म्य जताइ
वे के लीये श्रीआचार्यजी कहं प्रगट कीये । और
श्रीआचार्यजी अपनो स्वरूप जताए तो जानि प
ड्यो । नहीं तो न जानि पडतो । तहां कहत हैं । श्रीआ
चार्यजी श्रीभागवत की टीका के आरंभ विषै
आपुन कहे मुखारविंद को देवतारूप जो अग्नि
तारूप आपुन कहं प्रगट कीये हैं । ताते मुखार
विंदरूप जहां कहत हैं श्रीआचार्यजी के क
हे मे और कोई क्यों माने तहां कहत हैं । श्रीभाग
वत ताके निरूपण करनवारे हैं निरूपण तो
वचनरूप ही ताके करनवारे श्रीआचार्यजी हैं
ताते मुखारविंदरूप हैं । अब कहत हैं श्रीआ
चार्यजी प्रगट होइकैं । सुबोधनी आदि ग्रंथ
प्रगट कीने हैं ॥ अति गुढार्थ तिन कों ज्ञान और कों
न होइ । सेवकन हू कों दुर्बोध है और सेवकन क
हं जब तांई ज्ञान न होइ । जहां तांई कृतार्थ ता नांही
ताके लीये सेवकन कहं जा भांति ज्ञान सिद्धि हो
इ । ताके लीये और उपाय तो है नहीं । [illegible] याते ।
श्रीआचार्यजी के । एक सो आठ नाम । १०८ । निरू
पण करत हैं । तहां प्रकर्ष करि कहत हैं । ताको ।

५

अर्थ कह्यो ॥ श्रीआचार्यजी के नाम हैं तिनप्रग ॥ सो
यातै पहिलेंडु हे जैसे पूर्णपुरुषोत्तम के नामप
हिले कहे ॥ सो नां तितातें इनको प्रगटमात्र क
रत हे सो केसे नाम हें । सुबोधनी आदि हे के जे
सिद्धांत के ग्रंथनि तिनके जो निबंधमें । प्रतिबंधरूप
जो पापतो के हरिकरनवारे हें ॥ ऐसे अष्टोत्तर
सत नाम को प्रगट करत हें ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ या आंनि श्री
आचार्यजी के एकसो आठ नाम तिनको अलौ
किक आनंदमय कहि अवकहत हें । सवगोरज
हां नामन को प्रागट्य कह्यो है तहां छंद ऋषि दे
वता ये होत हें ॥ तो श्री आचार्यजी के नाम हें जे ते तो
अलौकिक आनंदमय हें तातें । इनके प्रगटक
रनवारे ऋषिहू अलौकिक चाहिये । तातें एक
सो आठ नामन के प्रगट करनवारे ॥ ऋषि को नि
रूपण करत हें ॥ श्लोक ॥ ऋषिरग्निकुमारस्तु ॥
नाम्नां छंदो जगत्यसौ ॥ श्रीकृष्णास्यं देवता च बीजं
कारुण्यकं प्रभु ॥ याको अर्थ ॥ या सबै तिन मस्तोत्र
के ऋषि जे हैं ते अग्निकुमार तहां यह पूर्वपक्ष राम
होइ जो वैसंपायन सहस्रनामादिकन के प्रगट । ११

(left margin:) सुबोधं

करनवारे ऋषि हैं। सो उनके समान होइगें।
यह आसंका दूरि करिबे के लीये तु शब्द कहै हैं
याते यह जांनियत हैं। एक सो आठ नाम मन के
प्रगट करनवारे जे ऋषि हैं ते और ऋषिन की
अपेक्षा अलौकिक जाननो। काहेते जहां ऋ-
षिन की गणना है तहां वेसंपायनादिक जे औ-
र ऋषि ते हू गणाए हैं। और वे जो मंत्र सहस्र नां-
म जो प्रगट कीये सो वेद पुराणादिकन में प्रसिद्ध मं-
त्र और सहस्र नाम तिन कहूं प्रगट कीये। तामें
अपूर्व वस्तु के प्रगट करनवारे नहीं ताते लौकि-
क ऋषि हैं यह जाननो। और इहां तो श्री आचा-
र्यजी के एक सो आठ नाम जे हैं ते वेद और पु-
राणादिकन में प्रसिद्ध नहीं। और अवतांई कोई
जान्यो नाहीं। ताते इनको नाम अग्निकुमार है
और अग्निकुमार कहिबे को और अभिप्रा-
य जो से [illegible] और जे ऋषि ते वेद और पु-
राणादिकन में कहे जो मंत्र और ठाकुरजी के ना-
म तिन के प्रगट करनवारे हैं। ताते जे प्रभुव।
मर्यादामार्गीय हैं। ता[मा]तें इहां श्री गुसांई-
जी कहे अग्निकुमार कहे हैं। ताते प्रभु पुष्टिमा-
र्गीय हैं। यह जाननो। और सोरह हजार ऋ

ग्निकुमारकहेजैसैंप्रसादरूपसक्रीजेकात्याय
नीताकेपूज[illegible]नकरतअलौकिक[illegible]मंत्रपु
राणइनमैंप्रसिद्धनहोइ। एसोमंत्रकात्यायनी।
महा[illegible]भागेयहप्रगटकरिपूजाकीये। औरबापू
जाकरिपहिलेंतोगकुरवरदानकीये। पाछेंरा
सक्रीडाकीये। ताभांतिश्रीगुसांईजीएकमोत्रा
ग्नोंमप्रगटकीयेतेंबेदपुराणनमैंकोईप्रसि
द्धनहीजानतहै[illegible]सोश्रीगुसांईजीप्रगटकी
ये। तातेंअलौकिकरूपऔरश्रीगुसांईजी
करिप्रगटकीये। जोएनांमन्त्रिनेंजोकोईपाठक
रे। ताकहेपहिलेंतोसेवाकोसिद्धिहोइ। आगेंग
कुरकेअधि[illegible]राभूतनकोआस्वादहोइ। तोआ
पुनकहेफलएतोकमांत्रिकेसिद्धिहोइ। इहां
कहाकहेतो। तातेंअग्नीकुमारकहेसोयातें
जैसेंरासक्रीमेंसबबनभक्तनकहेछोडिकेंएक
अग्निकुमारगुणातीततिनकीनरस्वामिनीजी
कहेराखिकेंजैसेंपूर्णपुरुषोत्तमलेयधारेतो
वासमेंवेअग्निकुमारस्वामीनीजी। ताभांति
इहांरूमभक्तिमार्गकेप्रचारकेलीयेब्राह्मण
वेषश्रीगुसांईकोऊपरहेतीनरस्वामिनीजी
रूपहैं। अग्निकुमारकेनहीं। तातेंअग्निकुमा

रकहे ओर प्रगट अर्थ तो यह जो श्रीरूप श्री आ
चार्यजी हे। तिनके पुत्र श्री प्रभुन हे। तातें श्री कु
मार कहे यामां तिरूपिको स्वरूप कहि छंदको
निरूपण करत हैं॥ छंद तो ओर सह अनामन।
को अष्टोत्तर सत नाम न को जो छंद जगती छंद
सो सर्वोत्तम स्तोत्र रूको छंद हैं कौ निरूपण करत
हें। सर्वोत्तम स्तोत्र के देवता फल ह्यां ताईं न हीं किं
तु पुष्टी मार्ग के फल के भोग करावन वारे कहे।
तहां यह पूर्वपक्ष होइ पुष्टी मार्ग फल तो ठाकुर।
के अधरामृत को आस्वादन सो तो ब्रह्मादिकन
करिके दुर्लभ हे। मर्यादा मार्गीय तिनकर अगम्य
हे। तहां कहत हैं। श्री आचार्यजी। कारुणिक हैं।
ता को अर्थ कहा॥ अपने सेवकन मे महा दयावंत
हें॥ कौन भांति सो कहत हैं॥ मध्वाचार्यादिकन के
नहिं॥ अपने सेवकन कह मुक्ति को जो दान करे
तो पुष्टी मार्ग को फल का ह कह हो तो नहीं॥ त
व कोई पुष्टी मार्गी [illegible] न करवावत॥ अपने सेव
क कह श्री आचार्यजी सब जीवन ते न्यारे करि
आपन करि प्रगट कीयो जो पुष्टी मार्ग ता को फ
ल दान करि सब जीवन ते बडे कीये एसे दयावं
त श्री आचार्यजी है॥ तहां यह पूर्वपक्ष होइ जो पु

६ हीमार्गकोफलकोईजाननतनहीं। औरगोकु
रलअपनेअतिअनंतरंगजेनकतिनकोंमैंअ
गटकीये। ताहिवेकोसामर्थ्य श्रीआचार्यजी
कहेक्योंसंभवेतहांकहतहैं। श्रीआचार्यजीके
सेहैं। जोगोकुरसोफलनहीयोजाय। सोश्रीआ
चार्यजीदानकरतहैं।। अबकहतहैं। यास्तोत्र
केपाठकोकहाफलसोकहतहैं।। श्लोक।। वि
नियोगोभक्ति। योगंप्रत्तिबंधविनासनं। कृष्णाध
राम्र तस्वादसिद्धिरत्रनसंशय।। याकोअर्थ।।
गोकुलकीजोसेवाताभैंजितनेप्रतिबंधहैं। तिना
केहरिकरिवेमैंसर्वोत्तमस्तोत्रकोप्रयोजनऔ
रपरमफलतोगोकुलकेअधरामृतकोआस्वाद
नसोकोनभांतिजाकहेजे सोअधिकारहेताभां
तिफलकोअनुभवहोइगोजेसें[illegible]जवश्रीगोकु
लजीवेणनादकीयेतबवेणुनादद्वारासवब्रज
ललनानकहताभांतिकोअनुभवभयोजाकहेज
सोअधिकारताकहतेसोयास्तोत्रकेपाठतेंफल
होइगो। परिहोइगोसर्वथाया। ताभांतिफलपर्यंत।
निरूपणकरिकेंअबश्रीगुसांईजीश्रीआचार्यजी
केनामकोनिरूपणकरनलागे तबस्वरूपको राम
स्मरणभयो।। तातेंजोआनंदभयोतातेंपहिलेपद २२३

जानेजोश्रीआचार्यजीआनंदरूपहैं।तातेंआ
नंदनामकहेजबआगिलोनामविचारनलागे
तबमनमेंविचारेजोआनंदतोअक्षररूपमेंहे॥
औरपूर्णपुरुषोत्तमरूपमेंहे॥औरतातेंमतिका
रूपकहे॥संदेहहोइजोश्रीआचार्यजीअक्षरके
रूपहोंहिंगे।यहसंदेहदूरिकरिवेकेलीयेना
मपरमानंदकहे॥ताकोअर्थकहाअगणित
पूर्णपुरुषोत्तमकोआनंदतारूपश्रीआचार्य
जीहैं॥तहांयहपूर्वपक्षहोईजोश्रीआचार्यजी
तोपूर्णपुरुषोत्तमरूपहैं॥तोलोकमेंतो[illegible]
प्रगटहेपुर्णपुरुषोत्तमक्योंकहे।जाहितहैंकि
हतहैं।श्रीआचार्यजीकेसेहें।श्रीकृष्णास्यंको
जेब्रजभक्तनसहितसुखपुष्टीमार्गीयपरमात्म
कजेसेतेन्लोकमेंप्रगटरूपएपरिपुरुषोत्तम
कहवाएतेयहनामकहेजोकृष्णास्यं।तहांयह
संदेहहोइजोश्रीआचार्यजीठाकुरकेमुखारा
विंदरूपहैं।तोपूर्णपुरुषोत्तमतोअलौकिकब्र
जलीलामेंप्रगटहैं॥तातेंश्रीआचार्यजीकूंप्र
गटब्रजमेंचाहिये।सोलौकिकस्वरूपमेंक्यो।
मंनवप्रागट्य।यहसंदेहदूरिकरिवेकेलीयेंकृ
पानिधि।यहनामकहे।ताकोअर्थकहाश्रीआ

॥७॥ वार्यजी अलौकिककृपासहित हैं । तोजिन
जीवनकपरकृपाकरनोतेजीवनकों उत्पत्तितो
लौकिकस्थलमैंतोश्रीआचार्यजीजोअलौ
[illegible] कि
कस्थलमेंप्रगटनेतवतेजीवनकोउद्धारनहो
तोतवश्रीआचार्यजीकृपानिधिनकहवावते
तातेंलौकिकस्थलमैंप्रगटभए । तहांयहपूर्वप
क्षहोइ । जोएसेकोंनजिनकेलीयेंश्रीआचार्य
जीलौकिकस्थलमैंप्रगटभए । यहसंदेहहरि
करिवेकेलीयेंयहनामकहे ॥ जोदैवोद्धारप्रय
त्नात्मा ॥ याकोअर्थ ॥ कहांदैवीजीवनकेउद्धा
रकेविखेंप्रयत्नयुक्तहें । अंनकरणजिनकों
एसेश्रीआचार्यजीहें । तहांदैवीसृष्टिकेजीव
रूद्रीकुआंतिकेकितनेतोएसेहैं । जिनकोसा
धनकरि [illegible]
उद्धारहोइ । ततोवेदपुराणनमेंकहेजोसाधन
करिकेंवेकृतार्थहोइगें ॥ तिनकेलीयेंश्रीआ
चार्यजीकोप्रागट्यनहीं । औरजेदैवीजीवनमें
पुष्टीमार्गीजीवहें । जिनकोठाकुरमर्यादामार्ग
केसाधनविनाउद्धारकरेंगे । जीवनकहतोठा
कुरकोसाक्षात्स्वरूपसंबंधफलहै । ताफल

केसाधनवेदपुराणमेंतो प्रसिद्ध नहीं । तोजेसुद्ध
पुष्टीमार्गीयहोइतो कछुज्ञानहोइ । औरकछु
नहोइ ।। तोश्रीआचार्यजीवनकहपुष्टीमार्गके जीमू
साधनकोज्ञानतोकाहूकहहोतोनहीं । नवपुष्टी कमेपु
मार्गीयकोज्ञाननहोतो । उद्धारहूनहोतो । औरपु टनहो
ष्टीमार्गीयव्यर्थहोइजातो । ताकेलीयेंश्रीआचार्य
जीकोप्रागट्ययहजनाइवेकेलीयें । हैबोद्धारप्रय
त्नात्मा ।। यहनामकहे ।। अबकहतहे । जेपुष्टीमा
र्गीयजेजीवहेतिनकेमनमेंऔरमार्गकोफल
आवेनहीं औरआपुनतेपुष्टीमार्गीयसाधनफ
लइनकोज्ञानतोहेनहीं । तातेंश्रीआचार्यजीकि
प्रागट्यतेपहिलेसेवकनकहअपनेउद्धारकी
आर्तिहती । क्योंहमारोउद्धारहेहोइगो । काहेतें न
जोपुष्टीमार्गकेसाधनफलतोजानतनांहीं । ता
तेंसोजबश्रीआचार्यजीप्रगटभएतबइनके
चरणारविंदकेस्मरणमात्रतेंसेवकनकहसा
धनफलकोज्ञानभयो ।। नवउद्धारभयो । आर्ति
सवगईयहजनाइवेकेलीयेंकहतहें ।। श्रीआचा
र्यजीकेसेहें ।। स्मृतिमात्रार्तिनाशन । स्मरणमा
त्रकरततहीं सेवकनकीआर्तिकेहरिकरनवारे
तहांकहाकहतहेंजोअन्यमार्गीयहूश्रीआचा

८ र्यजी के महात्म्य जो निस्मरण करतो वाहूकी
आर्त्ति जाय। ऐसे श्री आचार्यजी हैं॥ अब कह
त हैं। श्री आचार्यजी को स्वरूप जे जानत हैं। ते
तो पुष्टीमार्गीय भक्ति कहत प्रमाण कहे। परि जे
स्वरूप नहीं जानत पंडित तिनके मनमें संदेह ह
५ रिकरिवेकों श्री। श्री आचार्यजी को नाम कहत हैं
श्री भागवत तत्त्वार्थ प्रकासन परायण॥ याको अ
र्थ॥ या नाममैं और सास्त्रन को नाम न लीये। औ
र श्री भागवत को नाम लीये॥ तातैं पुष्टीमार्ग
को मूल सो श्री भागवत यामैं पुष्टीमार्ग कस्यो।
तहां यह पूर्वपक्ष होइ जो श्री भागवत को व्याख्या
न सब कोई करत हैं। परि वामैं गुप्त जो पुष्टीमार्ग फ
लरूप ताको ज्ञान काहू कहे है नहीं॥ श्री आचा
र्यजी कहे है॥ तातैं श्री आचार्यजी प्रगट कीये। तहां
यह पूर्वपक्ष होइ॥ जो श्री भागवत मैं तो मुक्ति फ
ल कस्यो। हे पुष्टीमार्ग को फल कहां कस्यो है। त
हां कहत हे॥ श्री भागवत को मुक्ति को फल भक्ति
कस्यो हे रस है॥ और यो कस्यो है भक्ति रस के
आगे सब मुक्त्यादिक तुच्छ हैं॥ यह सब निरूपण
श्री आचार्यजी कीये॥ तातैं यह नाम कहे श्री भाग राम
वत गूढ जो अर्थ ताके प्रकास करिवे विषैं विचा ११५

रस्वरूप हैं श्री आचार्यजी। अब यह पूर्वपक्ष होइ
जो पुष्टीमार्ग को फल तो ठाकुर के स्वरूप को
अनुभव ठाकुर को स्वरूप निराकार कह्यो
है। ताको अनुभव क्यो होइ। यह संदेह हरि करि
वे कै लीये। श्री आचार्य को नाम कहे जो साका
र[illegible]वादैकस्थापकः॥ याको अर्थ॥ श्री आ
चार्यजी कैसे हैं साकार हैं। सब इंद्रियन करि अ
नुभव करिवे कह योग्य और आनंदमय कर पा
द मुखोदरादि एसे जो। पूर्णपुरुषोत्तम तिनके
पुरूस हित स्थापन वारे। एसे श्री आचार्यजी हैं
तातें पुष्टीमार्ग के फल को अनुभव नलीभांति
होइगो यह जाननो॥ अब यह पूर्वपक्ष होइ जो
अवतार्ड साकार स्वरूप को इन कह्यो। और श्री
आचार्यजी क्यो कहे। यह संदेह हरि करिवे के
लीये श्री आचार्यजी को नाम कहत हैं। वेदपार
ग॥ याको अर्थ॥ ठाकुर को स्वरूप तो लौकिक
अलौकिक नेत्रन सह देख्यो तो न जाइ। तातें जा
नानि वेद कहे। ता नांतिमाननो॥ तातें साकार मा
ननो॥ और निराकार स्वरूप वेद ही कहत हैं य
रि वेद को संपूर्ण ज्ञान है न हो। यातें थोडी श्री
क्रतजां निकें बे अपने मन के आग्रह सो नि

मायाकोमायावादीनिकोमानुवादीन
रासकताानांकि भोगीत्र मातैंस्त्रोसरू
इत्र नी[illegible]ा॥ है॥
८ राकारस्वरूपकोनिरूपणकरतहैं।तातैंउनको
कह्योनमांनतो।औरश्रीआचार्यकहसामवेदकी
साखा तउपनिषतकोज्ञानहैं।तातैंविचारकर
तजोगहरातउयोसाकारस्वरूपकोसोनिरूप
णकीये।तातैंप्रमाणमांनतोयहनामकहे।अब
कहतहैं।यहिलेयहकहेजोश्रीआचार्य[illegible]सा।
प कारस्वरूकेस्थापनवारेताकरिमायावादनोह
रिमयोईकाहेतैं मायावादनोहरिमयाईकाहेतें
मायावादमैंनिराकारस्वरूपकह्योहैं।आगेंमा
यावादनिराकर्त्ती यहजोनामकह्यो।ताकोय
हअभिप्रायजोकोईयोंकहतहै।एकमायासत्य
है।औरसबमिथ्याहै।तोवहवादवेदसोंविरु
द्धहै।काहेतेंवेदमेंसबवस्तुवाहेसत्यकह्योहै
तातेंवहविरुद्धवादहै।ताकूकहैंहरिकीये।
श्रीआचार्यजीएसेहैंप्रभुहैं।यहजताइबके
लीयेंमायावादनिराकर्त्ता।२०।यहनामकहे
अबकहतहैं।मायावादतैंऔररूजेवादहैंतें
सबवेदकह्योहै।जोज्ञानइच्छाप्रयत्नयेईश्वर
मेंहैं।परिश्रानंदरूपस्वरूपवेदमेंकह्यो।तातैं
वहन्यायसास्त्रकोमतवेदसंविरुद्धहै।औरा राम
कर्मवादीकर्महीकहमुख्यमानतहै।ईश्वरक १२६

न हमानतेंही ओरसांख्यवादीभक्तनहीकहमुख्य
करमांनतहें॥ तातेंसबमतवेदसूंविरुद्धहें॥ ता
तेंसबमतनकोंश्रीआचार्यजीनिराकरणकीये॥
यहजताइबेकेलीये। सर्ववादनिरासकृत २२॥
यहनामकहें। सर्वसास्त्रनकोग्रहणकीयेकोंन
धर्मकोंआचरणकरतहें। यहसंदेहदूरिकरि
वेकेलीयेंनामकहेतहें भक्तिमार्गाब्जमार्त्तंड या
कोअर्थ। भक्तिमार्गरूपजोकमलताकेमार्त्तंड
कहेंसूर्यरूपप्रकासिकेंकरनवारे। याकरियह
जताएभक्तिशास्त्रजेश्रीभागवतश्रीगीतामेंजे
धर्मकहेतिनकोंआचरणकरतहें। श्रीआचा
र्यजीभक्तिसास्त्रकोग्रहणकीयो। ओरभक्तिको
कमलजोकहे॥ तातेंजेसेंकमलमहासुखकों
देनवारोहोइ॥ तातेंभक्तिमार्गहूओरमार्गन
कीअपेक्षामहासुखकोंदेनवारोहोइ॥ तातेंभक्ति
यहजाननो। ओरश्रीआचार्यजीकहसूर्यजोक
हेंतातेंजेसेंकमलकोंसनकरावनवारो। सूर्य
हीहें। तातेंभक्तिमार्गकेप्रकासनवारे। श्री
आचार्यजीहीहें। ओरकोईनहीं। यातेंसूर्यकहे
ओरसूर्यकरिप्रकासितजेकमलताकेरसभो
क्ताभ्रमरहें। ताकरिश्रीआचार्यजीकरिप्रगट

२०

कीयो जो भक्तिमार्ग तामें रसता के जोग करनें शक्ति गा
न कों श्री आचार्यजी अंगीकार कीये हैं ते जीव ही
और न ही। और जैसें सूर्य न कहें कारिये न हाय
न सूर्य न होइ जो श्री आचार्यजी के अंगीकारमा
त्रतें ठाकुर वश्य सें न होत है नहां कहत है ठा
कुर जैसें व्रजभक्तन सूं लीला करत परवश होइ
इनसें छिनिहैं नानां तिलीला चीतरके श्री आ
चार्यजी जिन कों अंगीकार कीये तें ठाकुर कहूं
वशतनिय होत है और ठाकुर कहं फलवांन
करिबे में साधन नहीं देषत साधन बिना फलदा
न करत हैं यह जताइबे के लीये यह नाम कहे
जो अंगीकृत्यैव गोपीशवल्लभीकृतमानव २
अनु कहत हैं जो श्री आचार्यजी अंगीकार क
रत हैं नहां कहत हैं श्री आचार्यजी कैसे हैं
अंगीकृतौ समर्यादा अंकार बिरयें भक्तिमार्ग गी
की मर्यादा के सीमा करत हैं जो श्री आचार्यजी
के अंगीकारतें पहिलें जीव यों जाने कहां में मु
क्ति लतें अधिक ठाकुर को संबंध साक्षात् संबंध
पाइके मैं कृतार्थ होउं जो पुष्टीमार्ग के प्रगट क
रनवारे तो श्री आचार्यजी तें मेरा मनोरथ सिद्धि राम
होइगो यह जानिकें पहिलें श्री आचार्यजी को २२७

[illegible]

औरनकहतापकोकरनवारोहै॥ पत्निकमलनी
तरजेंअमरतिनकहं आनंदकोउपजावनहारोहै।
ताभांतिश्रीआचार्यजीहू अन्यमार्गीहूनकहताप।
केउपजावनहारेहैं॥ औरनभक्तिमार्गहैतिनकहंमहा
आनंदकेउपजावनहारेहैं। यहजनाइवेकेलीये।
भक्तिमार्गाब्जमार्तंड यहनामकहे। अबकहतहैं॥
श्रीआचार्यजीकेप्रागट्यतेपहिलेंमर्यादामार्गहतो
तातेंब्राह्मणहीकहंमुक्तिकोअधिकारहतो। औ
रकहंनहीं॥ अतएवगकुरकेप्रसन्नहूआ मेंमु
चुकुंदकहंमुक्तिनदईकाहेतेंक्षत्रीहतोयातें। आ
गब्राह्मणजन्मपाइकेकृतार्थभयो। तातेंमर्यादा
मार्गमेंब्राह्मणहीकहंमुक्तिऔरकहंनही। सो
श्रीआचार्यजी॥ ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यशूद्रस्त्रीइनस
बनकहंपुष्टीमार्गप्रगटकरितामेंअंगीकारक
रिसबनकोउद्धारकीये॥ औरमुक्तितेंअधिक
फलदानकीये॥ असेंश्रीआचार्यजीहैं। यहजता
इवेकेलीयेंयहनामकहतहैं। स्त्रीशूद्राद्युद्धृतिक्ष
मः॥ याकोअर्थ॥ अपनेसामर्थ्यकरिसबजीवनके
उद्धारकरिवेमेंश्रीआचार्यजीसमर्थहैं। तातेंस्त्री
शूद्रादिकसबनकोउद्धारकीये। तहांयहपूर्वपक्ष

होइजोपुष्टीमार्गकोफलतोव्रजभक्तनकहसिद्धि
भयो।तोतहांरूसाधनदेखियतुहै।कहाजोघरको
परित्यागकरिसर्वरूपठाकुरकहजवजानेतवफ
लसिद्धिभई।ताभांतिइहांतोतुमकहतहो जोश्री
आचार्यजीकोअंगीकारकीयो।ताकोपुष्टीपुरु
षोत्तमदांनकरेविनासाधन यहवातक्योंसेनवे।
यहसंदेहदूरिकरिवेकेलीयेंनामकहतहे।अं
गीकृत्यैवगोपीश।वल्लवीकृतमानव॥याकोअ
र्थ॥व्रजभक्तनकहसर्वात्मभावादिकजोसाध
नतिनकरिठाकुरजेजेफलदानकीयेतामेंठाकु
रकोप्रयत्नताकरणतोइहांश्रीआचार्यजीकेअं
गीकारमात्रतेंजोठाकुरप्रसंन्नहोइकेंफलदां
नकरतहे।तोऔरसाधनकाहेकहैंकरियेतहां
यहपूर्वपक्षहोइजो।श्रीआचार्यजीकेअंगीकार
मात्रतेंठाकुरकोप्रसंन्नहोतहै।तहांकहतहेंठा
कुरजैसेंव्रजभक्तनसूंलीलाकरतपरवश्यहोइ
जैसेंस्थितिहेतामांतिलीलाभीतरकेश्रीआचार्य
जीजिनकोंअंगीकारकीयेतेंठाकुरकहेंवल्लभ
प्रियहोतहैं।औरठाकुरकहफलदांनकरिवेमें
न साधनहीदेषत।साधनविनाफलदांनकरतहैंय राम
हजनाइवेकेलीययहनामकहेजो॥अंगीकृत्यैव ११

गोपीशावहन्नभीकृतमानव।२। अबकहतहै।
जोश्रीआचार्यजीअंगीकारकरतहैं। तहांकह
तहै। श्रीआचार्यजीकैसेहे। अंगीकृतौसमर्यी
दा। अंगीकारविषेभक्तिमार्गकीमर्यादाकैसी
सोकहतहैं। जोश्रीआचार्यजीकेअंगीकारतें
पहिलेजीवयोंजानेकहांमैंमुक्तिरूपतेंअधिक
ठाकुरकोसंबंधसाक्षात्संबंधपाइकैमेंकृता
र्थहोऊ। तोपुष्टीमार्गकेप्रगटकरनवारेतोश्री
आचार्यजीतेंमेरामनोरथसिद्धिहोइगो। यह
जानिकेंपहिलेश्रीआचार्यजीकोस्वरूपजा
नि। पाछेंश्रीआचार्यजीसोंप्रार्थनाकरिजवश्री
आचार्यजीकेशरणआये। तबश्रीआचार्यजी
[illegible]। अपनेनिकटबुलाइकैठा
कुरकेसन्मुखवैष्णिमार्गरीतिसोंउपदेसकरिपा
छैंठाकुरकहसोंपिकेंपाछैंअपनेजांनिस्वी
कारकरेंजोयहमेराहे। तबठाकुरफलदांन
करें। यहअंगीकारकोप्रकार। यारीतिसोंअं
गीकारकरतहैं। यहजताइवेकेलीयें। अंगी
कृतौसमर्यादायहनामकहे। अबकहतहैंजी
वतो। अपनेउधारकेलीयेबहुतेरायत्नकरो।
गो। परिश्रीआचार्यजीमुक्तिरूपतें। अधिकजो

१२ फलताकोक्योंदानकरतहैं।यहसंदेहहरिकरि
वेकलीयें।यहनामकहतहैं।महाकारुणिक॥
याकोअर्थ॥जिननमध्याचार्यआदिदेकैंजेआ
चार्यहैं।तेअपनेसेवकनकहैंमर्यादाभक्तिके
उपदेसकरिआगेंमुक्तिकोदानकीय।तातेंनि
श्रीआचार्यजीहूदानकरेंतोवेजैसेंकारुणि
तैसे ककहवावें।तोश्रीआचार्यजीतोमहाकारु
णिकहैं।तातेंमुक्तिहूतेंअधिकजोपुष्टीमार्ग
संबंधसोसिद्धिकरतहैं।तातेंमहाकारुणिक
अवयहसंदेहहोइ।जोपुष्टीमार्गकोफलको
सिद्धकरनवारोअवनाईनदेख्योनसुन्यो।तातें
श्रीआचार्यजीमहाकारुणिकहैं।तोहूऐसेंक्यों
फलदानकरतहैं।यहसंदेहहरिकरिवेकेली
येंनामकहतहैं॥छ विभु॥२०॥याकोअर्थ॥जो
फलऔरकोईनदेइसकेतातेंदेवमेंश्रीआ
चार्यजीसमर्थहैं।औरजेआचार्यनएतेमर्यादा
भक्तिमार्गकेसाधनव॥औरफलकोदानकर
तहैं॥औरपुष्टीमार्गकेसाधनफलकोतोवि
चारहीनकरतहते।तातेंदेवकोसामर्थ्यकहांता
ईहोई।श्रीआचार्यजीमेंसबतेंअधिकसाम गम
र्थ्यहैं।यहजताइवेकेलीयें।विभुयहनामक

हतहैं। अबकहतहैं। यहपुष्टीमार्गकोफलवे
दनकहउत्तमहै। ताकोदानश्रीआचार्यजी
क्योंकरतहैं। यहसंदेहहरिकरिवेकेलीयें। य
हनामकहतहैं। अदेयदानदक्षश्च॥ ८८॥ याके
अर्थ॥ मर्यादामार्गसाधनश्रवणादिककोफल
सोमुक्तिसोऔरआचार्यदानकीये। तातेंश्री
आचार्यजीहूमुक्तिकोदानकरैं तोसवआचा
र्यनकेबराबरहोंइ। तबआपुनोभाग अआपुन
प्रगटकीयसोसवव्यर्थहोइजातो। ताकेलीयेंश्री
आचार्यजीकेसंदेहै। गकुरतैंजोऔरफलदान
कीयोनजाइताकेदेवेमेंश्रीआचार्यजीसमर्थ
हैंतोमुक्तिदेवेकोंसामर्थ्यहोइ। इहांकहाकहेंतो
यहजनाइवेकेलीयेंअदेयदानदक्षश्चयहना
मकहे॥ अबकहतहैं। दाताजोहोइसोतोपात्रअ
पात्रदेखिकैंदानकरै। यहसंदेहहरिकरिवेकेली
येयहनामकहतहैं॥ महोदारचरित्रवान॥ ८९॥
याकोअर्थ॥ जोश्रीआचार्यजीकेवलदाताहोहिं
तोपात्रअपात्रदेखिकैंदानकरैं। परिश्रीआ
चार्यजीतोउदारदाताहैं। केवलदाताओरउदार
दाताईमेंइतनोविशेषजोकेवलदाताहोइ। सोदा
नमेंतीर्थकोविचारकरैफलविचारेंपात्रअपात्र

१२ विचारिकैंदानकरें॥ औरउदारतोअपनेउदारता
सहजधर्मकरिपात्रअपात्रविचारिबिनादानकरै
तोयहलौकिकउदारताहे।तातेंअपनेसेवकन
कहेंपात्रअपात्रबिनादेखिकैंपुष्टीमार्गीयजो
फलताकोदानकरतहैं॥यहजताइवेकेलीयेंम
होदारचरित्रवान्॥यहनामकहे॥अबकहतहे
जोतुमयहकहे॥जोउदारतासोश्रीआचार्यजी
चिन पात्रअपात्रविचारेंदानकरतहैं।तोयहसामर्थ्य
पुर्णपुरुषोत्तममेंसंभवे।औरगेरनसंभवेतोश्री
आचार्यजीकोप्रागट्यतोलौकिकप्रपंचमेंहे।औ
रप्रपंचकेसवधर्मदेखियतुहैंतोएसोसामर्थ्यश्री
आचार्यजीमेंक्योंसंभवे।यहसंदेहदूरिकरिवे।
केलीयेंश्रीगुसांईजीकहतहे।जोश्रीआचार्यजी
कोप्रागट्यलौकिकप्रपंचमेंहे।औरलौकिकस
वधर्मदेखियतुहे।परिपूर्णपुरुषोत्तमहैं।यहजता
इवेकेलीयेंनामकहतहैंप्राकृतानुकृतिव्याजमो
हितासुरमानुष।२०॥याकोअर्थ॥श्रीआचार्य
जीकेसेहैं।साधारणजेलौकिकनकनकेनहीं।जो
आचरणकरतहेताकरिआसुरजीवहैंतिनकों
मोहउपजावतहैं।तेयाजानतहैऔरलोगनके। राम
नहीं॥श्रीआचार्यजीहैं।तहांयहपूर्वपक्षहोइजो १२०

देवीजीवनकहमोहनहोइ।लौकिक[illegible]नआ
वरणदेखिकैंतहांकहततहैं॥जहांमोहदेष्योनहिं
असुरनकहमोहदेखि[illegible]कौनमों।जैसेंकंसज ति
गगकुरदेवकीकेगर्भमेंआए।तबदेखिकैंयो
जान्योजोमेरेमारिवेकेलीयेपूर्णपुरुषोत्तमगर्भ
मेंआएहैं।परिआगेंमारेंमारेंवे[illegible]डीश्रीवसुदेव।
कीजीकहदीयोपाछेंपूतनाकहपठयो।औरपू
तनानहांजायकेंलौकिकबालककेनांहीजानि
कैंस्तनपानकराई।तानेंसबमोहअसुरनकह
देख्योहै॥देवीनकहनहींदेष्योजेसेंब्रह्मादिक
देवतागकुरकहगर्भमेंदेखिरूकैंयहजानेंजो
एपूर्णपुरुषोत्तमहैं॥कहांनयोजोगर्भआये।पु
हइनकीलीलाहै॥औरयेमोहमारेरत्नकहे॥
यहजानिकैंस्तुतिहीकीये॥परिमोहनभयो।ता
[illegible]नोंतिश्रीआचार्यजीकोस्वरूपज्ञाननहे।ते
योकहतहैंजोआचार्यजीपूर्णपुरुषोत्तमहैं।ह
मारेउद्धारकेकरनवारेहैं॥औरकहांनयोजोग
र्भमेंआए॥औरलौकिकनकैंनहींआचरण
देखियतहै।यहजाननतहैं॥औरजेअसुरहैंते
श्रीआचार्यजीकेलौकिकआचरणदेखिकें
मोहितहोतहैं।योंकहतहैंजोश्रीआचार्यजी

१४॥

सबलोगनकेनहीहैंलौकिकहैं।याजानिजानतहै
यहजताइबेकेलीयेयहनामकहतहैं॥जोप्राकृता
नुकृतिव्याजमोहितासुरमानुष।अवकहतहैं॥
श्रीआचार्यजीजोपुष्टीमार्गप्रगटकीयो॥तामेंजी
वनकोअंगीकारकरिउद्धारकीये॥औरअनेक
प्रमाणसंपुष्टीमार्गस्थापे मेंतोपूर्णपुरुषोत्तम
हूमैंनहीदेखेसोइनकहक्योंसंभवे॥यहजताइबे
केलीयेनामकहै।वैश्वानर।२२॥याकोअर्थ॥
श्रीआचार्यजीअलौकिकठाकुरकेमुखारविंद
रूपीजोअग्नितारूपहैं॥औरमुखमेंवाणीहूता
तेंबांणीरूपहूहै॥यातेंपूर्णपुरुषोत्तमकहे।इ
च्छानईनवपुष्टीमार्गप्रगटकीये।यातेंसंदेहनक
रनो।नहांयहसंदेहहोइजो।श्रीआचार्यजीअलौ
किकअग्नीरूपतो इनकोतेजभक्तनहूकहे
मसोजातनहोइगो।तबभक्तनसेवानलीमा
तिनकरीजातनहोइगी।यहसंदेहदूरिकरिबेके
लीयें॥यहनामकहतहैंवह्निमांख्य॥याकोअ
र्थ॥लौकिकअग्नीकेतेजमेंघटतीवढतीहैसी।
तकालमें।जबथोडोतेजहोतहै।तबतेजसह्योजा
तहै।औरउष्णकालमेंतेज बढतहोतहै।तातें
नहीसह्योजात।औरश्रीआचार्यजीतोअलौकि

कछश्रीरूपपूर्णपुरुषोत्तमकेमुखारविंदरूप
है।आनंदरूपतोसदासीयहीहोइतातेंश्रीआचा
र्यजीभीयहीहै.परिकवहूंअपीयनहीं।यहजता
इवेकेलीयेंवह्नभाखयहनामकहे।अबकह
तहैंलोकमेंसदाएकरूपीयपदारथहे।यरिवा
मेंकवहूनिमित्तपाइकेअपीयरूहोतहैं।स
प॥याकोअर्थ॥लोकमेंभीयसोसुखहीहै।श्री
रस्त्रीपुत्रादिकजेभीयरूहोतहैपरिसुखरूपतो
नहीं।तातेंकवहूंअपीयरूहोतहै॥औरश्रीआ
चार्यजीतोगकुरकेमुखारविंदरूपहैं॥सचिदा
नंदसुखरूपहै॥तोसुखतोसदांभीयहीरूपहोइ
तातेंसदांश्रीआचार्यजीपीयहीहैं।यहजताइवे
केलीये।सद्रुपनामकहे।अवकहतहैं।सेवक।
नकहअपने।अपनेभावकरितातिकेमनोरथ
पूरयोनजातहोइगोतासेव[illegible]कहश्रीआचार्य
जीमेंभीनकीघटतीहोइगी।यहसंदेहडरिके
रिवेकेलीयेंनामकहतहैं।हितकृत्सतो॥रुध॥
॥याकोअर्थ॥अपनेजिननेसेवकहैं।तेजेभा
वकरिमनोरथसूंसेवाकरतहेतिनकेमनोरथ
[illegible]।सिद्धिकरिजनकीसेवाकोअं
गीकारकरतहैं।परिजनकेमनोरथपूरिवेमें।

१५ कबहूं विलंब नहीं सहत तातें सबन कहं प्रीत नहीं हो
३ त है। यह जताइवे कें हूं नाम कहे हि लूतसता। आ
व कहत हैं। श्री आचार्यजी अपनो स्वरूप। और पु
ष्टीमार्गको फल [illegible] सब बचनसं। कहि कें जताए प
रि[illegible]ग कुरके सेवा को प्रकार नहीं बताए सो बचन।
सं बताया न जाइ। तातें आपुन ठाकुरकी सेवा करि
सेवकन कहं सिखावत हैं। सेवाको यह प्रकार ज
ताइवे के लीयें नाम कहत हैं॥ तन सिद्धा कृते कृ
ल्लन क्लि कृत॥२५॥ याको अर्थ॥ यद्यपि पुराण आ
गम में सेवा प्रकार कहे यरि वे पूजा मार्ग रितिसं पू
र्णपुरुषोत्तम के असवितृनिके प्रकार कहे कोंन।
भांतिन हाजो देवता है सो मंत्र के आधीन है॥ और
पूर्णपुरुषोत्तम तो मंत्र के आधीन नहीं है॥ केवल तन क्रि
के आधीन है॥ तातें तन सा स्वन में पूर्णपुरुषोत्तम
के सेवा को प्रकार नहि कह्यो। तातें श्री आचार्यजी आ
पु सेवा को प्रकार नहीं [illegible] सिखावत तो
सेवकन कहे पुष्टीमार्ग के सेवा को ज्ञान न तो न होतो
तब सेवक सेवा पूजा मार्ग रीतिसं करते। तब पुष्टी
मार्गीय न कहवावते। पूजामार्गीय होइ जाते। तातें
आपुन सेवा करि यामार्ग में सेवा फल है। यह जता रा
ए। और पूजामार्गतें सब न्यारी रीति जताए। वाको २१

प्रकारसेवकनकहतजवजनताए। तबपुष्टीमार्गी
यजनए। औरपुष्टीमार्गकेफलकीसिद्धिमई। यह
जताइवेकेलीयेंपहकहेजोजनसिद्धारूतेक
भक्तिकरत। तहां कहतहै॥ आपुसेवाकरिस
वनकहसेवासिखाए। इतनोआपुकहकहात्र
योजनहतोयहसंदेहदूरिकरिवेकेलीयेंयहनां
मकहतहै। निखिलेष्टदः। २६॥ याकोअर्थ॥ जो
श्रीआचार्यजीआपुइतनोश्रमकरिजोसेवाको
प्रकारनसिखावततोअपनेमार्गमेंतोसेवाही
मुख्यहै॥ सोतोकोईजाननतहीं॥ तवयामार्गको
जोफलठाकुरकोसंबंधरूपहैसोकैनसिद्धिहो
तोतोनिखिलेष्टनांमकहतहैं॥ अवकहतहै
जोभक्तिमार्गरीतिसंभजनसिखाए॥ इतनेनि
खिलेष्टदनकहवाए॥ [illegible]
[illegible] काहेतेंभक्तिमार्गतोभजनमार्ग
तामैंतोअनेकभावनसंभजनकोजवताइनि
खिलेष्टदनकहवावें। औरवेभावनकोदांनतो
जवठाकुरमेंजितनेलक्षणहैंतेसवलक्षणज
वहोहितोश्रीआचार्यजीमेंसवठाकुरकेलक्ष
णहैं। यहजताइवेकेलीयेंनामकहतहैं। सर्वल
क्षणसंपन्न। २७॥ याकोअर्थ॥ अवकहतहैश्री

१६। आचार्यजीकोंनवस्तुकेंह्नानकरतहैं।सोकहतहैं
श्रीमल्लज्ञानदः।२७॥याकोअर्थ॥रसरूपब्रज।
नकनंमहित।पुष्टीमार्गकेफलरूपजेपूर्णपुरु
षोत्तमतिनकेस्वरूपकोज्ञानताकेदेनवारे।ए
सेश्रीआचार्यजीहैं।तहांयहपूर्वपक्षजोठाकुर
के[illegible]ज्ञानकेप्रकारतोगीताभागवतादि
कमेंकह्योहेतिनतेंज्ञानहोइही॥तातेंश्रीआ
चार्यजीकहाज्ञानप्रगटकस्योहै।कहांकरुयों
कस्योहैठाकुरजगतकहव्यापिकरहेहैं॥एज्ञा
नरूपहैं।यामांतिकस्योहैपरिरसरूपस्वरूपप्र
गटनहीं॥कस्योतातेंजेश्रीआचार्यजीस्वसेवक
हैंतिनकेमनमेंवातआवतनही।तहांयहपूर्व।
पक्षहोइजोशुकदेवकपिलदेवनारदइत्यादि
कजेहैं।तेहूज्ञानकेदेनवारेतेकहेतोश्रीआ।
चार्यजीमेंकहाविशेषतहांकहतहैं।श्रीशुक
देवजीतथाकपिलदेवनारदादिजेहैंतेमर्यादामा
र्गीयहैं।औरयेश्रीआचार्यजीतोपुष्टीमार्गीयहै
तातेंइनकोदीयोज्ञानसोपुष्टीमार्गीयहै।यहज
नाइवेकेलीयें।यहनामकहे।श्रीमल्लज्ञानदः।त
हांयहसंदेहहोइ।श्रीआचार्यजीज्ञानदेतहैं।तहां राम
कारणकहातहांनामकहतहैगुरुः।२८॥याको १२३

अर्थ। जो जा मार्ग को उपदेश करनवारो होइ जा मा
र्ग को फल देनवारो होइ सो ता मार्ग को गुरु कहा
वावे जैसे कपिलदेव सांख्यमार्ग के गुरु हैं। वा मार्ग
के फलदाता हैं॥ ताते श्री आचार्यजी पुष्टिमा
र्ग के उपदेश करनवारे हैं। ताते या पुष्टिमार्ग के गुरु
श्री आचार्यजी हैं। यह जनाइवे के लीयें गुरु[illegible]नां
म कहे॥ अब कहत हैं॥ कपिलदेव तो अपने माता
सों सांख्यमार्ग को उपदेश कीये। तो श्री आचार्यजी
ताएं पुष्टिमार्ग छोडि और मार्ग को निरूपण कीयेन
हीं सो क्यों। यह संदेह हरिकरिवे के लीयें नाम कह
त है। स्वानंदतुंदिल॥ ६०॥ याको अर्थ॥ श्री आचा
र्यजी कसे हे पूर्णपुरुषोत्तम को जे अगणित आनं
द ता सूं पुष्ट हे। याते और मार्ग को फल और वा नस
व तुच्छ लागत हे श्री आचार्यजी कहा॥ और आपुन
मे जो आनंद है॥ सो सब वस्तु के भुलावनवारो हे त
हीं। याते पुष्टिमार्ग छोडि और मार्ग को निरूपण न
हीं कीये। यह जनाइवे के लीयें नाम कहे। स्वानंदतुं
दिल॥ अब कहत हैं। श्री आचार्यजी आनंद सें पुष्ट
हैं॥ यह जानि क्यों पडे॥ न क्रन कहत यह संदेह हरिक
रिवे के लीयें नाम कहे॥ पद्मदलायतविलोचन ४१

१७ याकोअर्थ। कमलकेपांखुरीकेनहीं। वडेनेत्रजि
नकेऐसेश्रीआचार्यजीहैं। तानेत्रकरकैकमलकोउ
पानजोदीयेतातेंयहजाननो। जैसेंकमलकीपांखु
रीजैसेंदेखेनहांसुखकीदेनवारीसीतलहोइ। औ
रलालरेखाकरिसुगंधहोइ। तातेंश्रीआचार्य
जीकेनेत्रहूजेजनकूंदर्शनकरतहैं। सोतिनकूंप
रमसुखकेदेनवारेशीतललालरेखासहिततैसे
नेत्रहैं। औरश्रीआचार्यजीकेहृदयमेंजोआनंदहै
सोनेत्रनमेंजानिपडतहै। यहजानिबेकेलीयेयहना
मकहे। जोपद्मदलायतविलोचन। अबश्रीआचार्य
जीकेनेत्रकटाक्षनकोकार्यभक्तनमेंहै॥ यहजता
इवेकेलीयेंभक्तनकोंअलौकिककार्यसिद्धक
रतहै। तबभक्तनकहजेआतिआनंदहोतहै। ता
तेंभक्तश्रीआचार्यजीकीसेवामेंएकक्षणमात्र
कोबिलंबनहीसहिसकतनिरंतरसेवाकरतहैं
यहजताइबेकेलीयें। भक्तसेवितः। २५। यहनाम
कहे॥ अबकेहतहैं सेवकतोबहुतहैं। तोभक्त
केनोवतकरिमनोरथश्रीआचार्यजीपूरन
सकतहोंहिगे। सोसेवककेमनमेंजोतिनके
रथहोहिगे। यहसंदेहदूरिकरिबेकेलीययहनां

मकहे ॥ सुखसेव्य ॥ २६ ॥ याकोअर्थ ॥ यद्यपिश्री
आचार्यजीके । भक्तवकृतसेवाकरिवेकीइछा
है । परिभक्तजोभावकरिजारीतिसंसेवाकरिवेकी
इछाकरतहैं ॥ ताकहश्री आचार्यजीतातीतिमनोर
थपूर्णकरिसेवाकोअंगीकारकरतहैं । एसेप्रभु
हैं । यातैसबभक्तनकरिसुखसंसेवाइबेकेयोगप
हैं । यातैंयहनामकहे । सुखसेव्य । अबकहतहैंजै
सेंभक्तनसंसुखकरिसेइबेकोयोग्पहैं ॥ तातेंति
औरनहूंकहसेइबेकेयोग्पहोहिंगे । यहसंदेह
हरिकरिवेकेलीयेयहनामकहतहैं । अराधा । २
७ ॥ याकोअर्थ ॥ अ भक्तसेवकनहीं ॥ हेरवाहेरवी
श्रीआचार्यजीकीबडाईसुनिकैसेवाकरतहै । ति
नकहकवहूंएकसंतोषमात्रउपजतहे । परित
नीनंतिसेवाकोनिर्वाहनहीहे ॥ यहजताइबेके
लीयेयहनामकहेअराधा । तहांयहांपूर्वपक्ष
होइ । जोतुमभक्तनकहसुखसंसेव्यकहे ॥ और
नकहकवहूंसुंसंतोषमात्रउपजेपरिसेएनहीं
जायसोक्यों । यहसंदेहहरिकरिवेकेलीयेयहनां
मकहतहैं ॥ ऊर्ध्वांघ्रीसरोरुह ॥ २८ ॥ याकोअर्थ
जोभक्तनहूकहश्रीआचार्यजीकेचरणारविंद

पाइबेमेंजो आर्त्तिरूपदुःखताकरिचरणारविंदा
कीप्राप्तिहोइतोअभक्तहेतिनकहचरणारविंद
कीप्राप्तिकहांतेहोइ। यहजताइबेकेलीयें। दुर्ल
भांघ्रिसरोरुह। यहनामकहे।।जोअभक्तनकहदु
खःकरिपाइबेकह योग्यनहीहें। चरणकमलजि
नकोएसेश्रीआचार्यजीहें।।अभक्तनकहप्राप्तिन
होइ।।तहांओरहुकारणकहतहें।।उग्रप्रताप।व
ए।।याकोअर्थ।।अभक्तनकहअ[illegible]हेतेजे ञा
जिनकोएसेश्रीआचार्यजीहें।तोअभक्तनसूंनि
कटहूनरह्योजाइ।तोसंबंधकहांतेहोइ।यहजो
ताइबेकेलयिंउग्रप्रताप।यहनामकहे।यहसंदे अव
हहोइजोतुमश्रीआचार्यजीकोअसह्यतेजक
हेतोभक्तनहूकहअसह्यहोइगो।यहसंदेहहरि
करिबेकेलीये।नामकहतहें।।वाक्सीधुपूरिता
शेषसेवकः।।याकोअर्थ।।श्रीआचार्यजीअपने
वचनामृतकरिवाहिरभीतरपूर्णकीनेहें।सेवक
जिनकरिप्रसन्नहें।।वचनकहजोअमृतजोवहेता
अ करिमृतजेसेसवईजीयनकहेसुखकोउपजाव
नहारोहोइ।ओरसबकोतापकहहरिकरे।तातेंति राम
श्रीआचार्यजीकेवचनहूसबनकहसुखकेउप २२५

जावनहारे ताप के हरि करनवारे हैं। याही तें सेवक
स्त्री श्री आचार्यजी को तेज सस्यो ज्ञान है। जो वचन
नामृत संपूरित है। औ रस नहीं सस्यो ज्ञान ते अब
कहत हैं॥ श्री आचार्यजी श्री भागवत के अर्थ नि
रूपण करनवारे हैं। जो बचनामृत तिन कूं करि
अपने सेवकन को ताप हरि करत हैं। यह जी ता
इ बे कहु नाम कहत हैं॥ श्री भागवतपीयूष
समुद्र मथन क्षम॥ धर॥ याको अर्थ॥ श्री भा
गवतपीयूषरूपी जो अमृत समुद्र ता भीतर जो
सार है। ताके काढिबे के लीयें जो मथनो ता में स
मर्थ हैं। श्री आचार्यजी ता करि सेवकन कहूं जो
ताप हतो जो या मार्ग में आइ के श्री भागवत को
अर्थ न जाने सो सुबोधनी आदि के जो बचनामृ
त ता करि सबन कहुं अर्थ जनाइ के ताप हरि की
ये। यह जी ताइबे के लीयें यह नाम कहे। जो श्री भा
गवतपीयूषसमुद्रमथनक्षम। अब कहत हैं। त
त्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रह॥ धर॥ याको
अर्थ॥ श्री भागवतरूपी जो अमृतसमुद्र ता में सा
ररूप जो ब्रजभक्तन को भावता संपूरित है। स्वरूप
जिनके ऐसे श्री आचार्यजी हैं॥ अब कहत हैं इष्टतें
अमृत बडो है॥ तातें इष्ट के समुद्र में मथन करत॥

अमृतसारनिकस्यो।इहांतोश्रीभागवतहीअमृतस
मुद्ररूपतोअमृतनतैंओरतोकछुगनमहैंनहीं।तातैंब्र
जभक्तनकोभाववहीसाररूपयामैंमुक्तिरूपतैंअधिक
ताजैसैंखीरसमुद्रतैंप्रगटतोसारअमृतताकेभो
गकरनवारेजेमैंदेवताहैंतातैंनियहतो।श्रीभाग
वत रूपीसमुद्रतामैंसारजोब्रजभक्तनकोभाव
ताकेभोगकरनवारेश्रीआचार्यजीहैंओरकोईन
हीं।ओरदेवतानकेअमृतभीनरहीरस्यो।ओर
श्रीआचार्यजीमैंतोब्रजभक्तनकोभाववाहिर
भीतरसंपूर्णहै।यहजताइबेकेलीयेंयहनाम।
कहे।।तत्सारभूतरासस्त्रीभावपूरितविग्रहः।अब
कहतहैं।जोक्योंजानियेंजोभावपूर्णहै।।तहांक
हतहैं।सांनिध्यमात्रदत्तश्रीकृष्णप्रेमा।४३।।या
कोअर्थ।।जोबस्तुसंपूर्णहोइ।सोसोबस्तुयहदेइ
सकेतोश्रीआचार्यजीजोभाव रसपूर्णहैंतो
ओरनकूंकहेंअपनेसांनिध्यमात्रकरिठाकुरके
प्रेमकोदानकरतहैं।नहींतोदाननहोइ।यहजता
इबेकेलीयेंयहनामकहे।सांनिध्यमात्रकरिठा
कुरकेप्रेमकोदानकरतहैं।नहींतोदाननहोइ।य
हजताइबेकेलीयेंयहनामकहे।सांनिध्यमात्रदत्त
श्रीकृष्णप्रेमाजोब्रजभक्तनमहिततेफलरूपप्र

णिपुरुषोत्तमतिनकेप्रेम कोदांनकरतहैं ॥ अबक
हतहैं ॥ श्रीकृष्ण हीमेंप्रेमकोदानकरतहैं । तहां
कौनकारण । यहसंदेहहरिकरिबेकेलीयेंनामक
हतहैं । बिमुक्तिद ॥ ४४ ॥ याकोअर्थ ॥ ठाकुरकोसा
तात्संबंधजोपुष्टीमार्गयमुक्तिताकेदेनवारेहैं
तहांकहतहैं । [illegible]
[illegible] ॥ पुष्टीमा
र्गकेठाकुरकोसंबंधकहमुक्तिजोकहेताकौ क
हाअभिप्राय । तहांकहतहैं जेसेमर्यादामार्गमेंसा
युज्यमुख्यफलहै ॥ ताभांतिपुष्टीमार्गमेंठाकुरको
संबंधमुख्यहै । यातेठाकुरकेसंबंध [illegible] कह
मुक्तिकहे ॥ औरजेमुक्तभएतिनकहं ॥ फिरसंसार
नहोइ ताभांतिजेसाक्षात्संबंधपाएतिनकहफि
रसंसारनहोइ ॥ यहजताइबेकहमुक्तीकहे ॥ अब
कहतहैं ॥ पुष्टीमार्गकेफलकहसबमार्ग [illegible] तेअ
धिकप्रमाणपूर्वकनिरूपणकीये ॥ यहजताइबे
केलीयेंनामकहतहैं ॥ राशालीलैकतात्पर्य ॥ ४५ ॥
याकोअर्थ ॥ जोमुक्तिपुष्टीमार्गकेफलतेंजोअधि
कहोइ ॥ [illegible] तो
ठाकुरतोपहिलेरासक्रीडाकरियाछै ॥ ब्रह्मानंद
कोअनुभवकरवावतेसोठाकुरतोब्रह्मानंदको

२१ अनुभवपहलेंकरवायेंतेंतो [illegible] स्व [illegible] ानंद।
अनुभवकरनो। यहहीमुक्तिमुक्तितेंसबतेंअधिक
है। यातेंयहहीमुख्य हू फलहैं। तातेंरासलीलाई
मेंश्रीआचार्यकोअभिप्रायहे। यहजताइबेकेंली
यें। रासलीलेकतात्पर्ययहनामकहे। अवऔरहू
प्रकारकरिपुष्टीमार्गकेफलकहअधिकेंताए ज
यातेंयाकलीयेंआगिलोनामकहतए। कृपयेत्क त
पाग्रह। ५६। याकोअर्थ। जिनसेवककुपरकृपा
करिश्रीआचार्यजीनाकहरासलीलाकीवार्ताको
अनुभवहोतहे। औरजहाकृपाविनाकहनोहेत
हाकहनोहीहे। तहाअर्थकोअनुभवनहीहोत
तोअनुयहहीतसेवकजबरासलीलाकेवार्तान
कोअनुभवजवकरतहे। तबयोंजानतहें। पुष्टी
मार्गकोफलबडोहे॥ अबकहतहें। तवसेवक
नकहसंयोगरसऔरवियोगरसहोऊरमनको
अनुभवहोतहें॥ परिश्रीआचार्यजीविचारकीये
केवलवियोगरससंयोगरसहूतेंश्रेष्ठहेंकाहेंतें
वाकीअवस्थाँनातिकीहे। कवहूविकलताहो।
इकवहूचेंननपडेकवहूमूर्छाहोइ। कवहूएक
गवद्रूपहोइ। फिरिविलापकरें। एअवस्थाके रा
तदकरिवियोगरसश्रेष्ठहें। तातेंसेवकनकह २२

वाकेअनुनवकरवाइवेकेलीयेसबवस्तुकोत्या
गकीरोपहलउपदेसकरतहे काहेतेघरमेरहेते
वेअवस्थानहोहि।।तातेत्यागकोउपदेशकरतहे
औरश्रीआचार्यजीकरिबांधीजोमर्यादातारीतिसं
जोरहेतोएसोभावरूहोइ।यहजतावेकेलीयेयह
नामकहे।।विरहानुभवैकार्थसर्बत्यागोपदेशक।४
७।।याकोअर्थ।।अबकहतहैं।।भक्तिमार्गकेसेवा
मेंस्थिरतारूहोइताकेलीयेभक्तिमार्गकोजेआ
चरणतारूकोउपदेसकरतहैं यहजताइवेकेलीये
नामकहतहैं।।विरभक्त्याचारोपदेष्टाच।।४८।।याको
अर्थ।।भक्तिमार्गकोजेआचरण कहाजोअन्याश्र
यछोडनोगकुरसूंकछुफलवांछनाकरनी।औ
रफलरूपजानिसेवाकरनी।।येजोभक्तिमार्गको।
आचरनतिनकेउपदेसकरनवारेश्रीआचार्य
जीहैं।।औरआपहूआचरणकरनवारेहै।अबआ
गिलोनामकहतहे।।कर्ममार्गप्रवर्त्तक।४९।या
कोअर्थ।।यहअभिप्रायजोसेवकनकहभक्तिमा
र्गहीकेउपदेसजोकरनेवर्णाश्रयधर्मछुडाइकैं
तोसेवकनकहफलसिद्धिहोतीपरिजेबहिर्मुख
हैंतिनकहभक्तिमार्गमेंरोखबुद्धिआवतीजो
भक्तिमार्गकछुनहीं।काहेतेंजामेब्राह्मणआदि

तअनेकधर्मनंकिछोडिदेअन्यहोइजाइकैंहेको
उत्तममार्गहे॥याभांतिवहिर्मुखनकहदोषवुधि
आवेतोभक्तिमार्गतोनिर्दोषहे।तातेंउनकहदो
षवुद्धिनआव।तातेंकर्ममार्गहूकोउपदेसकीयेजो
सबकोईअपनोकर्मकरोछोडोमतियहजताइवे
केलीयेंकर्ममार्गप्रवर्त्तकयहनांमकहे।अवकह
तहैं।श्रीआचार्यजीयज्ञजेकीयेसोसेवकनकहभ
क्तिमार्गकेअपराधदूरिकरिवेकेलीयें।यहनाम
कहतहैं॥यागपादोभक्तिमार्गैकसाधनत्वोपदेसकः
५०॥याकोअर्थ॥भक्तिमार्गमेंदोइवडेअपराधहैं
एकतोठाकुरछोडिकेंओरदेवताकोसंबंधजातें।
ओरपुष्टीमार्गकेफलकेपाइवेमैंजोप्रतिबंधजा
तैफलसिद्धिनहोहि।सोश्रीआचार्यजीयज्ञकीये
पाछेसोकोनभांतियज्ञमैंसबदेवतानकहयहसि
खादीयेजोकोईयज्ञकरसोइन्द्रादिकयज्ञमैंजोदे
वताहैंतिनकह।ठाकुरकीविभूतिअंसजानिकैं
सेवकनकोसन्मानआदरकरपरिस्वतंत्रदेवता
मतिजानोयाकरिअन्याश्रयदूरिकीये।ओरअ
पुनयज्ञदानादिककोफलयहविचारेजोभक्ति
मार्गपाइवेमैंजितनेप्रतिबंधहैं।तेसबदूरिहोयता राम
करिसेवकनकहसिखादीये।जोतुमयज्ञदांना १२८

दिक करि और फल मति विचारो यह विचारो जो भ
क्ति मार्ग के फल पाइबे में प्रतिबंध है ते दूरि होंहि।
यह सिखाय सेवकन दीनी यह जताइबे कहं। याग
दौ भक्ति मार्गैक साधनत्वोपदेशक। यह नामक
हे। तहां यह पूर्वपक्ष होइ जो वेद में यज्ञ को फल
तो स्वर्ग लोक की प्राप्ति कही है। तो श्री आचार्य जी
जो यज्ञ कीये होंहीगे सो स्वर्ग लोक के पाइबे कों
तहं नाम कहत है। पूर्णानंद। ५१। याको अर्थ। श्री
आचार्य जी पूर्णपुरुषोत्तम के आनंद संपूर्ण हैं।
तो स्वर्गादिक में जो आनंद है। सो तो पूर्णपुरुषो
त्तम के आनंद को अंस है। तातें श्री आचार्य जी
कहं वाकी वांछा नाही यातें स्वर्ग लोक के पाइबे
कहं तो यज्ञादिक नहि कीये। तहां कोई कहे जो
स्त्री पुत्रादिकन के पाइबे कहं यज्ञ कीये होंही
गे। यह संदेह दूरि करिवे के लीये नाम कहत हैं। पू
र्णकाम। ५२। याको अर्थ। लोगन कहं वांछित जे
स्त्री पुत्रादिकन को सुख सो तो श्री आचार्य जी
कहं सबतें अधिक है कोन भांति। स्त्री तो श्री अ
क्का जी पुत्र तो श्री गुसांई जी सारिखे। तातें लौकि
क सुख हू के लीये यज्ञादिक नही कीये। किन्तु
केवल भक्तन के सिक्षा के लीये यज्ञादिक की

ये। सिक्षा कहा जो यज्ञादिक करे सो भक्तिमार्ग के
फलमैं जो प्रतिबंधता के। हरिकरिबे केलीये क
रो। यह सिक्षा केलीये कीये। अब कहत हैं। और
नहू के कामना के जो पूर्ण वारे है। श्री आचार्यजी
तो आपुन पूर्णकाम हो हि इहां कहनो यह जता
इबे केलीये नाम कहत हैं॥ वाकपति॥ पद॥ याको
अर्थ॥ श्री आचार्य कि सेवकनि निगं निके है। कि
ते कन कों सेवा करत हू [illegible] निमे मन है। कितने
क [illegible] से है॥ तिनकों केवल सेवा में मन है। ते जब
[illegible] कि कअग्नि मैं होम करत हैं॥ तब सब होम
[illegible] कौ अंगीकार श्री आचार्यजी करि कह स
वन कहे फलसिद्धि करत हैं। ते आपुन अग्नीरूप
हैं याते तो औरन को मनोरथ पूर्ण करत है। तो आ
पुन को मनोरथ होइ हि इहां कहा कहनो। अब
कहत हैं॥ जिन को ज्ञान मैं मन है तिन रू कहं फल।
श्री आचार्यजी देत है। विबुधेश्वर॥ पद॥ याको अर्थ
भक्तिमार्गीय जे ज्ञानी है तिनरू कहं गाकुर के स्वरू
पको जे ज्ञान ता के देनवारे श्री आचार्यजी हैं। यह ज 1
ताइबे केलीये विबुधेश्वर यह नाम कहे। अबक
हत है॥ ज्ञान गाकुर के स्वरूप को कौन रीति सं राम
देत है। श्री आचार्यजी सो कहिबे केलीये नाम १२१०

कहतहैं ॥ कृष्णनामसहस्रस्य वक्ता ॥ ५५ ॥ याको अर्थ
कृष्णजे फलरूप पूर्णपुरुषोत्तम तिनके सहस्रनां
मतिनके प्रगट करनवारे हैं ॥ तहां यह पूर्वपक्ष हो
इ गाकुरके मैं हजार नाम तो बैसंपायनादिक हू
कीये हैं ॥ तहां कहत हैं । परिवे पुरानमें सिद्धिनोनां प्र
मते कहे ॥ और श्रीआचार्यजी तो फलरूप श्रीभा
गवतमैं जिनको निरूपण है । ऐसे पूर्णपुरुषोत्तमति
नकी जो लीलासहित जे नाम तिनको निरूपण
श्रीआचार्यजी कीये ॥ और कोईन कीये यह जीना
इबे केलीयें ॥ कृष्णनामसहस्र वक्ता । यह नां स्य
म कहे ॥ अब कहत हैं ॥ ये हजार नाम आवश्य कर
ने यह जनाइबे कह नाम कहत हैं । भक्तपरायण ।
५६ ॥ जो श्रीआचार्यजी नाम हजारनको जो भाग
वन करेंगे तो सेवकनको श्रीभागवतके अर्थ
ज्ञान तो कांइ कहन हो तो तब श्रीभागवतमें जो
फल कहे सो न सिद्धि होतो ब श्रीभागवतमें आचार्य
जी भक्तनके हित करिवारे यह नकरवावते और ज ये
वह जार नाम प्रगट कीये तब श्रीभागवतके अर्थ जा
नेया छे सबनकह फल सिद्धियो ॥ यह जीनाइबे क
ह भक्तपरायण । यह नाम कहे । अब कहत हैं ॥ ना
क्ति मार्गको आचरण जीनाइबे केलीये । छोड्यं थ

सुप्रगटकीये॥ यहजीताइबकेलीयेंनामकहतहै॥
भक्त्याचारोपदेसार्थं। नानावाक्यनिरूपक॥ ५७॥
भक्तिमार्गकोआचरणजेसेवादिकताकेउपदेस
केलीये। नवरत्नभक्तिवर्द्धिनीइत्यादिकछोटेग्रंथ
प्रगटकीये॥ असेश्रीआचार्यजीप्रभूअबकहतहै
सेवकजेहते॥ भक्तिमार्गकोआचरणजांनिकैं। आ
नंदयुक्तहोइ। कहाकीयेसोकहतहैं॥ स्वार्थोज्झिता
खिलः। प्राणप्रिय॥ ५८॥ याकोअर्थ॥ श्रीआचार्य
जीकीसेवाकेलीयें। औरअपनेउद्धारकेलीयेसे
वाकरनविरोधीपदार्थजेछोडेहें॥ एसेजोसेवक
तिनकहप्राणहूतेंप्रीयहे। श्रीआचार्यजीअबक
हतहें॥ प्राणहूतेंप्रीयहेंयहकोंजांनिपडेसोजता
इबकहनांमकहतहें॥ नाइसवेष्टित। ५९॥ याको
अर्थ॥ जेश्रीआचार्यजीकीसेवाकेलीयेंसबवस्तु
जेछोडेहें एसेजोसेवकतिनसूंसदांमिलेईरहतहैं
एसेश्रीआचार्यजीहें। अबकहतहेंसेवकजबआ
सक्तकरिजबसेवाकरनबब्रासणादिकजेसेव
कनिनकहकर्मकरिवेकोंसमेतानआधेनबदोष
लगे। तहांकहतहें। वहदोषहूश्रीआचार्यजीह
रिकरतहें। यहजीताइबकेलीयेंनामकहतहें:।
स्वदासार्थकृताशेषसाधनः। ६०॥ याकोअर्थ॥ से

वकजेश्रीआचार्यकीसेवाआसक्तिसूंकरतहैं।
तिनकहूआपनेकर्मसमैतोनहीसधततबदोषल
गतहै॥श्रीआचार्यजीआपुनकर्मतोसमैतोजो
साधतहैं।ताकरिवहदोषदूरिकरतहै।औरक
ज्यातिककोईकहेजोश्रीआचार्यजीकेसेवकहै
तिनकहूकर्मकरिबेकोकहाकामकर्मकेंछो
डिदेबो॥यहसंदेहदूरिकरिबेकेलीये॥आपुन
कर्मकीयेताकरियहजताएजोमैंहूकर्मकर
तहूं।तातैंकोईछोडोमति।कर्मसेवाकरित
बअबकासपायोतबकरो।यहउपदेशकरत
हैं॥यहजीताइबेकेलीयेंयहनामकहे।स्वदो
सार्थकृतादोषसाधनतहोयहपूर्वपक्षहोइजो
आपुनश्रीआचार्यजीकर्मकोसमैसाधिकैंऔ
रकेदोषक्योंदूरिकरतहै॥
।यहसंदेहदूरिकरिबेकेलीयेंनामकहतहैं।
सर्वसक्तिधृक्॥९१॥याकोअर्थ॥सबजोअलौ
किकसक्तितिनसैंसामर्थ्यजिनकोहेतासूंसा
धनकरिभक्तनकेदोषदूरिकरिबेकेलीयेंस
मर्थहैं।तो श्रीआचार्यजीसाधनकरिसेवक
नकेक्योदोषदूरिकरतहै।यहसंदेहनकरनो
अबकहतहैं।श्रीआचार्यजीविचारकीयेजोमैं

हंसदे

अपनेआगमदसामैंसबनकहतउपदेशकरिभ
क्तिमार्गकोप्रचारतोकीयोपरिआगेंभक्तिमार्ग
कोप्रचारजीवनमेंमेरेपराहदसामेंक्योंहोइगो
यहजानि।श्रीगुसांईजीकहप्रगटकीये।यहजी
ताइवेकेलीयिनामकहतहैं।तुविभक्तिप्रचारै
कर्कतेस्वानयकन्त।६२॥याकोअर्थ॥भूमिमें
आगेंभक्तिमार्गकेप्रचारकेलीयेंअपनेपुत्रश्री
गुसांईजीतिनकेप्रगटकरनवारेहैं॥असेंश्रीआ
चार्यजीसोपुत्रहूएकमांनिलीयेपुत्रनहोंहि॥य
हजीताइवेकेलीयेंनामकहतहैं।पिता॥६३॥
याकोअर्थ॥श्रीगुसांईजीकहतहैं।मैंमांनिली
योपुत्रनहींमात्रासुतरूयहजीताइवेकेलीये
पितायहनामकहे।तहांयहपूर्वपक्षहोइजोपि
ताकेसमा[illegible]नजोपुत्रनहोइतोपिताकोकाज
क्योंकीयोजाइपुत्रसूतानेंश्रीआचार्यजीकेस
मांनजोश्रीगुसांईजीनहोंहि।तोआगेंक्योंभक्ति
मार्गकेप्रकारहोइयहसंदेहहरिकरिवेकेली
येयहनामकहतहैं।स्ववंशेस्थापिताशेषस्वमा
हात्म्य।६४॥याकोअर्थ॥श्रीआचार्यजीकहतहैं
अपनोसबमहात्म्यसववधर्मश्रीगुसांईजीमेंराखे राम
तातेंजेसेंश्रीआचार्यजी[illegible] १३२

तैसैं श्रीगुसांईजी इनमैं भेद न जाननो। और
जो सामर्थ्य श्रीगुसांईजी कहे है। अब कहत हैं
श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी मैं अपने धर्मस बरा
ख। यह बडो आश्चर्य है। यह संदेह हरिकरिबेके
लीयें नाम कहत हैं। स्मयापह॥ ६५॥ याको अर्थ
सब आश्चर्य के हरिकरनवारे श्रीआचार्यजी हैं
तातें आश्चर्य न करनो। तहां यह संदेह होइ जो।
आश्चर्य न करनो। इहां कारण कहा। यह संदेह
हरिकरिवेके लीयें नाम कहत हैं॥ पतिव्रतापा
ति॥ ६६॥ याको अर्थ॥ लोकमैं पिता माता तो पुत्र
मैं जो घटती देखियत है। सो पिता माता के दोस
सूं कि पिता दुष्ट होत है। कि माता दुष्ट होइ तातें
पुत्रमैं दोष होत हैं। और इहां तो जसैं श्रीआचा
र्यजी प्रभु के मुखारविंदरूप हैं। जो श्रीआचार्य
जी के समान श्रीअक्काजी न होहि। तो श्रीआ
चार्यजी उनके पतिहीन होहि तातें आचार्यजी
और श्रीअक्काजी समान हैं॥ तातें इनतें प्रगटन
ए श्रीगुसांईजी तेऊ श्रीआचार्यजी के समान है
यह जाननो॥ और लोकमैं पिता माता तें रूर
हत पुत्र बुरो होत हैं। तहां जीव को अदृष्ट निमित्त
सो श्रीगुसांईजी मैं न संभवे काहेतें अदृष्ट जीव के

आनन
८५

म

हल्लगेपरिईश्वर॥ यात्तेंसंदेहनकरनोंइनक
कोनल ने
हेभ्रइक्षमलगे।तातेंश्रीआचार्यजीओरश्रीगु
साईजीसमांनहेइनमेंभेदनहीं।तातेंश्रीआचा
र्यजीकोकार्यश्रीगुसांईजीकीयें।अवककहतहैं
श्रीआचार्यजीअपनेसेवककंकहइहलोकसं
बंधीपदार्थ।ओरपरलोकसंबंधीपदार्थसिद्धि
करतहे॥यहजीताइवेकेलीयेंनामकहतहैं
वलौकिकेहिकदानंकरत॥हद्य॥याकोअर्थ
जोअहद्यसंज्ञोस्त्रीपुत्रधनादिकहोतहैं तेग
कुरकेसंबंधीनहीहोत।ओरजोश्रीआचार्यजी
कोदानकरतहैं॥तिनकोंविनियोगगाकुरमें
होतहैं।भगवदीयहोतहे॥ओरजोकहियतहै
जोयाकहतत। मत्रहद्यसूंतीर्थवासनयोत
तीर्थमेंमरयो।तातेंकृतार्थनयोतोवहकृतार्थ
नयोतोवहकृतार्थहोनोकमुक्तिरूपओरश्री
आचार्यजीकेसहैंलौकिकजेस्त्रीपुत्रादिकते
सेवाकहनपयोगदेतहैं।ओरपरलोककोफ
लतेगाकुरकोसंबंधरूपफलताकोदानकर
तहै।एसेश्रीआचार्यजीकबदेहिगे।यहसंदेह
हरिकरिवेकेलीयेंनामकहतहैं।निगूढहद
यो॥हृद॥याकोअर्थ॥श्रीआचार्यजीईश्वरहैं

तातैंज्ञानिवेकहहअज्ञाक्यहैस्युदयजिनकोएसो
श्रीआचार्यजीहैं॥ तातैंफलदानमैंसंदेहनकरनो
फलसोदैइगेपरिकवहेइगे। यहजोनिनपडे। ता
हांयहपूर्वपक्षहोइजोश्रीआचार्यजीसवसेवक
नकहअपनीइछानहींजनावततकिंवाकाहूक
हूजीनावतहैं॥ यहसंदेहदूरिकरिवेकेलीयेंना
मकहतहैं॥ अनन्यमनकेंपुत्रापितासय। ८९॥
याकोअर्थ॥ अनन्यजेमनकेंअनरंगमनकेंपअन
न्यहासप्रत्नत्रिआदिंतिनमैंजीताएहैं। अपनोअं
न: करणजिनकरिएसेश्रीआचार्यजीहैंतातैं
यहजानतोसेवकअनेंनहैं। परिजोसेवककह
श्रीआचार्यजीअपनीइछाजीनावैसोजानेअ
वकहतहैंकवहूंएकश्रीआचार्यजीकेसेवक
पूजामार्गीयनकेसंगतें [illegible] योजानकजा
निकजोपूजामार्गऔरभक्तिमार्गएकहेकाहूतें
सेवाहोकगरहेयहजानिकैंजोपूजामार्गमेंजो
जायवाकरह॥ श्रीआचार्यजीअपनेमार्गकोनि
रूपणकरिवामार्गमेंतेकाढिफिरिअपनेमार्ग
मेंलावतहैं। यहजीताइबेकेलीयेंनामकहतहैं
उपासनादिमार्गीनिमुग्धमोहवारक॥९०॥ याको मि
अर्थ॥ पूजामार्गआदिदेकेंजोमार्गनिनकहपूजा

मार्गीयनकेसंगतनसंभक्तिमार्गजानिकेजेअन्यमार्ग
मेंप्रवर्त्तहोतहै॥तिनकहंश्रीआचार्यजीभक्तिमा
र्गकोनिरूपणकरिफिरिअपनेमार्गमेंलावत
हैं।एसेश्रीआचार्यजीहैंतहांयहपूर्वपक्षहोइजो
भक्तिमार्गके।निरूपणमात्रकरिकेंसेवकके
अज्ञानहरिहोतहैं।यहसंदेहदूरिकरिबेकेली
येंनामकहतहैं॥भक्तिमार्गसर्ववमार्गवैलक्षण्यानु
भवकृत्।३२॥याकोअर्थ॥श्रीआचार्यजीजेसे
वकसबभक्तिमार्गकोनिरूपणकरतहैं।सोपूजा
मार्गओरभक्तिमार्गकोन्यारीरीतिजताइकेकों
नभांतिपूजामार्गमेंजोदेवताकीपूजाकरियतहै
सोदेवतामंत्रनकेआधीनहै।ठाकुरकीविभूति
हैपरंतुपुरुषोत्तमहैनहीओरभक्तिमार्गमेसेव्य
हैतेपुरुषोत्तमहैंमंत्रकेआधीननहीं।केवलभक्तकेआ
धीनहैं॥तातेंतुमभक्तिमार्गछोडिकेंक्योंपूजामार्गमे
गयोफिरिभक्तिमार्गमेंआव।याभांतिकहिकेसेव
ककहंअपनेमार्गमेंलावतहै।यहजीतायवेकेली
येयहनामकहतहैं तहांअबकहतहैं।अर्जुनको
देकेंशरणमार्गकोन [illegible] तोसे शरणमार्गको
उपदेसकीयेसोशरणमार्गपुष्टीमार्गहोइगो।य
हसंदेहदूरिकरिवेकेलीयेनामकहतहैंएथ्यकृशा

रणमार्गोपदेष्टा ॥ ७४ ॥ याको अर्थ ॥ शरणमार्ग रू
होइ तांनिको है। एक पुष्टीमार्गीय। एक मर्यादामा
र्गीय॥ पुष्टीमार्गीयको तो जैसें ब्रजमें वर्षा कीयो। त
व सब ब्रजवासी ठाकुरके शरण आए तो वह शर
णमार्ग पुष्टीमार्गीय कहे है तें जब शरण आए तब ठा
कुर उनको अंगीकार करिकें श्रीगोवर्द्धनधरणकरि
रिक्षा कीये और सात दिन तांई स्वरूपानंदको
अनुभव करवाए। तातें पुष्टीमार्गीय और अर्जुन
कहे जे शरणमार्ग को न जांनि। अपने शरण तुल्य
ऽ अपने आधीन करिकें मुक्तिको दांन करें।
तातें श्रीआचार्यजी यावांनिन्यारे न्यारे शरणमा
र्गके उपदेश करे। यह जीवनके लीयें। यह नाम
कहे। पृथक् शरणमार्गोपदेष्टा ॥ अब आगिलो
नांम कहत है ॥ श्रीकृष्णहार्दवित् ॥ ७५ ॥ याको
अर्थ ॥ ठाकुर जे साधनको उपदेस करत है। सो अ
धिकार देखिकें अनएव अर्जुन कहे मर्यादा पुष्टी
में अधिकार है यातें उपदेस हू कीये वैसो कौन
जानि अर्जुनसों यों कहे। तूं मेरे शरण आव। मैं पा
प हरिकरूंगो तो मर्यादाको अंस कारे तें शरण
आएको कह्यो। यह फल नहीं जो पाप हरि होइ।
तातें मर्यादाको अंश और पापको फल जे सोक

करि ताकेहरिवेमें औरसाधननबताए। अपनेआरएला
ए। यहपुष्टीकोअसनाहैं अर्जुनकहजेसोअधिका
रहेरिवतेसोउपदेसकीये॥ औरब्रजवासीकोउत्त
मअधिकारदेखिउनकहअपनेआरणलाइस्व
रूपानंदकोअनुभवकरवाए। अर्जुनकहआरणा।
७५ लाइकैमुक्तदेआदीये। यहसबगाकुरकेअभिप्रा
यकोजाननवारेश्रीआचार्यजीहै। यातेंश्रीकृष्ण
हार्दवितयहनामकहे। श्रीआचार्यजीयहजानेजो
पूर्णपुरुषोत्तमकोमनतोब्रजभक्तनसंजेलीलार
समेंमग्नहै। [illegible]। यहजा
निकेंआपहूलीलारसमेमग्नभए। यहजीताइवे
कहनामकहतहैं। प्रतिक्षणनिकुंजस्थलीलारस
पूरितः॥७४॥ याकोअर्थ॥ प्रतिक्षणकुंजमेंस्थिति
जेपूर्णपुरुषोत्तमतिनकीजोब्रजभक्तनसंली।
लाताकोजोरसतासूंबाहिरभीतरपूर्णहैं। श्रीआ
चार्यजीतहांयहपूर्वपक्षहोइजोरसतेंपूर्णतोस्व
हेयमेंहोइगे। तोबाहिरभक्तनकहक्योंजानिप
डे। यहसंदेहहरिकरिवेकेलीयेनामकहतहैं त
त्कथाक्षिप्तचित्तः॥७५॥ याकोअर्थ॥ रासलीलाके
रसकीजोवार्तातामेमग्नहोंतिप्रेस्याहै। चित्तजि
नकरिरासश्रीआचार्यजीहैं। तोनिरंतररसवेवार्ता राम

अपनेसेवकनके आगेकहतहै। तातेंजोलीलारसपू
र्णै। श्रीआचार्यजीहैं॥ औरहूकहतहैं कुंजस्थि
तजेपूर्णपुरुषोत्तमतिनकह। एक संयोगलीला
एकवियोगलीलासो श्रीआचार्यजीदोऊलीलान
संपूर्णहैं॥ जवसंयोगलीलाकेरससंपूर्णरहतहै
तवतोवाहिरभीतरवारससंपूर्णहै॥ अनुभवलीला
कोरसकरतहैंतसं[illegible]वेरहतहैं। औरवियो
गलीलारससंजवपूर्णहोतहै॥ तवरस्योनहींजा
ततातेरसवार्त्तासेवकनसूंकहिकालनिर्वाह
करतहै॥ तवसेवकजानतहैं। जोश्रीआचार्यजी
वियोग संयोगरससंपूर्णकेवलआनंदरूपहैं। याभांति
जांनतहैं॥ अवकहतहैं श्रीआर्यजीलीलारसही चा
कीभावनाकहतहैं। औरवाभा[illegible]नहींकहतसोकों
यहसंदेहहरिकरिवेकेलीयेनामकहतहैं। तद्वि
स्मृतानप। ७३॥ याकोअर्थ॥ रासलीलाकीजोरस
वार्त्ताकरितल्पोरह। सवरससूंविरुद्धपदार्थजि
नकरिएसेश्रीआचार्यजीहै। याकरियहजीताएजो
वस्तुसुरासलीलाकीसुधिआव। सोवस्तुश्रीआचा
र्यजीकह[illegible]तावहैं॥ औरजावस्तुसौलीला ते
कीसुधिनआवे। सोवस्तुप्रीयनहीसोक्योंजानिये
सोजीताइवेकेलीयेनामकहतहैं। ब्रजप्रिय। ७४

२९

॥ याको अर्थ ॥ ब्रजहे प्रियजिनकहँ असे श्री आचा
र्यजी हैं। याकरियहजीताये जो ब्रजके देखवे तोरा॥
सलीलाकी बकुतसुखिआवनहैं॥ तातैं ब्रजप्रीय
लागतहे। ब्रजप्रीयहे। यहक्योंजांनिपडे॥ यहसंदे
हहरिकरिवेकेलायेनांमकहतहैं। प्रियब्रजस्थि
ति॥ याको अर्थ॥ प्रियहब्रजमेंस्थितिजनकहँ ऐ
सेश्रीआचार्यजीहैं॥ जो ब्रजप्रियनहोइ तो तहांस्थि
तिनकरयाकरियहजीताए ब्रजवकृतप्रीयहे
तहोयहपूर्वपक्षहोइ जो ब्रजप्रीयहुदेपरितहां
स्थितिकाहेकहकरतहैं॥ यहसंदेहहरिकरिवेके
लीयेनांमकहतहैं। पुष्टिलीलाकर्त्ता॥ ७९॥ याको
अर्थ॥ ठाकुरजेरासलीलाकीयेसोब्रजहीमेकीये
यहजांनिश्रीपुश्रीआचार्यजीब्रजहीमेहैं। आप
रासलीलाकोअनुभवकरतहैं॥ औरसेवकन
कहरासलीलाकोप्रकारजनावतहैं। यहजीताइ
बेकेलीयेपुष्टिलीलाकर्त्तायहनामकहे। अवक
हतहैं। अपनेसेवकनकहलीलाकोप्रकारजी
ताइबेकरह [illegible] रसानुभावतोकरवावतहैं। पु
रिआसुनरसकोअनुभवएकांतहीमेंकरतहैं
यहजीताइवेकेलीयेनांमकहतहैं॥ रहःप्रियः॥ राम
८०॥ याको अर्थ॥ एकांतहेरसकोअनुभवएकां १३५

तहै। प्रियजिन कहे एसे श्री आचार्यजी है। काहेतें र
सको अनुभव एको नहीं मैं होइ यातें एकों नवरू त
भावत है॥ अब कहत हैं। सेवकन कहे कवरू एक
गकुर की पुष्टी लीला कहि तिन की आर्त्ति हरिक
रत है। यह जीनाइवे के लीये नाम कहत है॥ भक्ते
छापूरक ॥ ६१॥ याको अर्थ॥ भक्तन के इछा पूरन
वारे एसे श्री आचार्यजी है। अब कहत है। जैसे पुष्टी
लीला जानिवे की आर्त्ति हरिवे के जे सें पुष्टी लीला
कहि आर्त्ति हरि करत हैं। तातें ति आपुन कहत र
सको अनुभव सो कसेवकसों कहत हैं हिग। य
हसंदेह हरिक रिवे के लीये नाम कहत है। सर्वसा
तलीन ॥ ६२॥ याको अर्थ॥ सब भक्तन हू कहिन
हीं जानी है लीला जिनकों एसे श्री आचार्यजी है
या करियहै जानतें जो आपुन कहे जा रस को अनु
भव है सो अपने सेवकन हू मों नही कहत। औ
र प्रकार कहत है॥ । जो काहू सेवक
कहे भाग्य करियहै मनोरथ होत है॥ जो श्री आ
चार्यजी जा रस को अनुभव करत है। सो रस जाने
तब वा सेवक हू को मनोरथ पूर्ण करत है। यह
जीनाइवे के लीये नाम कहत है॥ अतिमोहन ॥ ६
३॥ याको अर्थ॥ यद्यपि भक्तको मनोरथ जानत है

जो [illegible] हमयारसको अनुभव करत हैं। तारस जा
निबेकी इच्छा है यह जानिकें वासेवक कहक हिबे
कह योग्य जोग कुरकी लीला सोयाते जानि कहत हैं
जा भांति सुनन मात्र रसको जो आवेश होत है। [illegible]
[illegible] सेवक कहता करि ऐसो
मोह युक्त होत हैयों जानत है। जो श्री आचार्यजी र
सकी वार्त्ता कहि मेरा मनोरथ पूर्ण कीयें। [illegible] याते जा
नि सेवक को मनोरथ पूर्ण कीये। यह जीताइबे के
लीयें नाम कहत हे॥ अतिमोहन अब कहत हैं
जैसें अपने सेवकन कहरसको अनुभव करवा
वत हे। ताभांति और नहू कहरसको अनुभव
करवावत होहिंगे॥ यह संदेह दूरि करिबे के ली
येनाम कहत हें॥ सर्वासक्त ॥ ५४ ॥ याको अर्थ ॥ अ
पने सेवकन तें जो और हे॥ तिनकहरसको अनु
भव नहीं करावत॥ और सेवकन कहतो रसको
अनुभव न करवावनो आवश्यक है। यह जानि
केरसको अनुभव न करावत हैं॥ याके लीये नाम
कहत हे। भक्तमात्रासक्त ॥ ५५ ॥ याको अर्थ ॥ पुष्टी
मार्गीभक्त में अतिकृपायुक्त है। तातें [illegible]न हरस क
को अनुभव करावत हैं॥ औरसों नही [illegible] करा राम
वत। अपने सेवकन में और हू अतिकृपा करत १३६

के आगे श्री आचार्यजी [illegible]
देको अन्यरसको भुलावतहे । तहानामकहेहे ॥ पर:
अर्थ ॥ श्रीआचार्यजी केसेहे अद्भुत रहत पर प्रभु बोलम
ररसभुलावतहे ॥ अबकहतहे । श्रीआचार्यजी
गकुरकी लीलारूपी जो यज्ञ ताकरि अपने से
वकनकेहृन्लीलानिपूर्णकरतहैं । यहजोता
ड्वकेली पेंनामकहतहैं ॥ लीलामृतरसार्द्रा
द्रीकृताखिलशरीरभृत् । ८० ॥ याको अर्थ ॥
गकुरकेलीलारूपी जो अमृतरसतासों भीजे
हृतै भीजे कीयेहे । सेवक जिन [illegible] एसे श्रीआ
चार्यजी हैं ॥ तहां दोइ बार भीजे एसे कहे ताको य
प्र ह अभिप्राय श्रीआचार्यजी करि लीलारससों भीजे
जे एसे सेवकनके सेहे जे कोई अपने पास बेठत
हे तिन हूकों हू ॥ आपुसे करत हैं । कोनभांतिजे
सें । एक भीज्यो वस्तु होइ सो आपुनसूं जो सूको
वस्तु लगे ताहू भींज्यो करे ताभांति एसे श्रीआचा
र्यजी सेवकनकह वाहिर भीतर रससूं भीजे क
रतहैं ॥ अबकहतहैं ॥ अपने सेवकनकहं आप
नो दीयो जो सबल सो हृजनावतहैं ॥ यहजोनाइ
बेकेली पेंनाम कहतहैं । गोवर्धनस्थिरोत्साहः ॥
८१ ॥ याको अर्थ ॥ श्रीआचार्यजी केसेहैं श्रीगो
वर्धनपर्वतऊपर रहिवेकों हे निश्चय जिनकहिं उत्सा
एसे श्रीआचार्यजी । श्रीगोवर्धनपर्वतऊपर रहि
कें पर्वतको स्वरूप हृजीता एजो रत्नमइ गोकादि २

३२ धातुमयलीलाश्रष्टिको एसो श्रीगोबर्द्धनपर्वत है
यहजीताएनहिंतोपहिलें जान तन हूतो। यहसंदे
ह हरिकरिबेकेलीयेनामकहत हैं। तहांलीला
प्रेमपूरित॥ एवं॥ याको अर्थ॥ ठाकुर श्रीगोब
र्द्धनोद्धरण जब कीये तब इंद्र नयतें शरण आए
जो ब्रजवासी तिन कहं सबजीवनतें प्यारो अप
नेकरमानतहिनतोंई॥ तूषप्यास हरिकरिस्वरूपा
नंदको दान करि तृप्त कीये यह जो लीला ताक
रिप्रगटनयो जो प्रेम ताकरि पूर्ण है। श्री आ तहां सं
चार्यजी तो सब लीलारससंपूर्ण हतें। श्रीगोब देह
र्द्धनोद्धरणलीलासंबंधी जे प्रेम ताही सें पूर्ण है।
यह क्यौं संभवे। यह संदेह हरिकरिबे के लीयें ना
म कहत है। यज्ञभोक्ता॥ एवं॥ याको अर्थ॥ श्रीगो
वर्द्धनपर्वत कहं जे योग ताभी नरही नो जो बलिता
के भोजन करया छे यद्यपि श्रीगोवर्द्धन को उद्धर
ण कीये परि तोहू श्रीगोबर्द्धनोद्धरण मे बलिके
भोजन कारण है॥ और भोजन नो विषै मुख कार
ण तो मुखरूप श्री आचार्यजी है॥ तातें याग को भो
ग करन वारे। श्री आचार्यजी हैं। यातें यज्ञभोक्ता नां
म कहत हैं॥ तहां यह पूर्वपक्ष होइ पहिलें याकूं ग राम
विना याग को भोग क्यों संभवे। तहां कहत है। ६६ २३०

जो छष्टि कीयो तामें बलि भोजन कहं कारण तातें य
ज्ञ नो क्रा पहिलें कहे हैं । पाछें यज्ञ करता कहे हैं । तहां य
ह पूर्वपक्ष होइ । श्रीनंदरायजी कहं गोत्सब यागजी
में गाइन को सन्मान करनो सो चेहमै प्रसिद्ध एसो
यद्यपि ठाकुर उपदेश कीये । परि उपदेश मुख ही सो
कीये । तो मुखरूप श्री आचार्यजी तातें श्री आचा
र्यजी के यज्ञ कर्त्ता नाम कहे । अब कहत हैं । श्रीगो
वर्द्धन के पूजा में श्री आचार्यजी सब ब्रजवासीन सों
यों कहे जो या गोवर्द्धन की पूजा करो नहि तो अपनो
भलो न होइगो । यह कहि कें ब्रजवासीन सों पूजा क
राई सबन कहं सब पुरुषार्थ सिद्ध कीये यह जाना
इ वे कहं नाम कहत हैं । चतुर्वर्गविसारद ॥ एष ॥
याको अर्थ ॥ यद्यपि लोग में तो चतुर्वेपद कारि धर्मा
अर्थ काम मोक्ष कहियतु हैं परि ब्रजवासीन कहं
ये पुरुषार्थ चहियें नहीं एक ठाकुर के स्वरूपानंद
को अनुभव चाहिये तो ब्रजवासीन कहं अरु गाइ
न कहं स्वरूपानंद को अनुभव कराय सब पुरुषा
र्थ सिद्धि कीये । श्री आचार्यजी यद्यपि ठाकुर उप
देश तो मुख ही तें कीयो तातें श्री आचार्यजी हू उ
पदेश कीयो यह जांननो । अब कहत हैं । अपने सेव
कन कहं पुष्टिमार्गीय जे धर्म अर्थ काम मोक्ष तिनें सि

३२

ष्टिकीये। तेधर्मादिककोंनसोंकहत्तहैं। धर्मतोगकु
रकीसेवाकरनी। अर्थतोगकुरकोस्वरूपकोमना
तोगकुरहीकोमोक्षतो अलौकिकदेहपाइकैंब्रज
भक्तनकेनहिकों आनंदको अनुभवकरनोतोयेपु
रुषार्थनकोदानकरतहै। श्रीआचार्यजी। यहजीना
इवेकहनामकहै। सत्यप्रतिज्ञ ।।५५।। याकोअर्थ।।
यथार्थहैप्रतिज्ञाजिनकीएसेश्रीआचार्यजीहैं।। ज
वश्रीआचार्यजीगकुरकीआज्ञातेंपुष्टिमार्गको
प्रगिद्धकीयेजपामार्गमेंमेरेशरणआवेगे। तिनक
हमेंपुष्टीमार्गीयपुरुषार्थदानकरिउद्धारकरूंगो
यहजीनाइबेकहनामक[...]हैसत्यप्रतिज्ञ। तहां
यहपूर्वपक्षहोइजोअबतोंहीसत्यप्रतिज्ञातोकाहू
कीनदेखीतोश्रीआचार्यजीक्योंप्रतिज्ञासत्यहोइ
गी। यहसंदेहदूरिकरिबेकेलीयेंनामकहतहैं। त्रि
गुणातीत।।५६।।याकोअर्थ।। मायाकेगुणताक
रिरहितहैं। श्रीआचार्यजीयाकोअभिप्रायजो[...]
मनुष्यहैंतिनकहमायाकेगुणकोसंबंधहेतातेंदोषयु
क्तहैं। यातेंप्रतिज्ञानहीसिद्धहोतऔरश्रीआचार्य
जीतोमायाकेगुणकेसंबंधकरिरहितहै। तातेंनि
र्दोषहैं। तोइनकीकृतिनिर्दोषहै। यातेंसत्यप्रतिज्ञान
ई।। अबकहतहैं।। जिनजीवनकेउद्धारकेलीयेंप्र १३७

तिन्हाह्नकीयेतिनजीवनकहं॥अपनेमार्गकीरीति
मर्यादाज्ञाताइबेकेलीयेंअपनेसिद्धांत[illegible]जिनमें
निरूपणहै॥असेग्रंथप्रगटकीये।श्रीआचार्यजीय
हज्ञाताइवेकेलीयेंनामकहतहैं।नयविशारद।
९७॥याकोअर्थ॥अपनेसिद्धांतकेशास्त्रतिनकेक
रिवेमेंमहानिपुणऐसेश्रीआचार्यजीहैं॥अवकह
तहैंसास्त्रजोकीयेताकोकारण[illegible]आगिलेनाम
मेकहतहैं।स्वकीर्त्तिवर्द्ध॥९८॥याकोअर्थ॥अप
नेमार्गकेग्रंथजवनिरूपणकीयेतवसेवकवडाई
करनलागेजोश्रीआचार्यजीकेवरावरिकोइनहीं
तातेअपनेसेवकनमेंकीर्त्तिकेबढावनहारे।असे
श्रीआचार्यजीहैं।अवकहतहैं।मायावादआदिदे
कैजोसास्त्रतिनकेप्रगटकरनवारेजोपंडिततिन
हूमेंअपनीकीर्त्तिवढाई॥यहजीताइबेकहनाम।
कहतहैं॥तत्त्वसूत्रभाष्यप्रदर्शक॥९९॥याकोअ
र्थ॥व्यासकेसूत्रहैंतिनकोअर्थनिरूपणजामेंहो
इजोसोअणुभाष्यग्रंथकेकरनवारेश्रीआचार्यज
हैं।तहांयहपूर्वपक्षहोइजोव्याससूत्रकोअर्थतो
शंकराचार्यादिकप्रगटकीयेहैं।तोश्रीआचार्यजीमें
कहाअधिक्यहैं॥तहांकहतहैं।वेदमेंगकुरको
रसात्मकसाकारस्वरूपजेसोस्वरूपकस्योहैंता

३४ नांतिव्याससूत्रकोअर्थतोशंकराचार्यादिकनंनहीं
कीये।अपनेमार्गरीतिसोनिराकारस्वरूपनिरूपण
कीयेसोतोवेदमेंसुद्धविरुद्ध।तातेंमतीनांतिव्या
ससूत्रकोअर्थचेनहीकीये।श्रीआचार्यजीनेजा
नांनिरसात्मकतानांतिसाकारस्वरूपवेदमेक
ह्योतानांतिव्याससूत्रको।अर्थकरिश्रीआचार्य
जीनिरूपणकीयें।तातेंव्याससूत्रकोअर्थतोश्री
आचार्यजीहीनेउत्तमरीतिसंकीये।यहजीताइबे
केलीयेंतत्वसूत्रभाष्यप्रदर्शीकयहनामकहेंअ
बकहतहें।याकरिपंडितनमेंअपनीकीर्त्तिब
ढायहजाननो।तहांकोऊकहेंआजिकलियुगमें
मायावादकेआगेंसबसास्त्रदषेगए।तातेंनित्र
तुनाष्पदूदष्यागयोहोइगो।यहसंदेहदूरिकरि
बेकेलीयेंनामकहतहें।मायावादाष्पतूलाग्नि
१०० ॥याकोअर्थ॥मायावादरूपीजोरूईकीटेरी
ताकेभस्मकरनवारेअग्निरूपश्रीआचार्यजीहें
याकरियहजीताए।असेरूईबडिकजेराशि
सोंरचकहअग्निकेसंबंधकरिनिरूपीतकीये
एकअर्थ।अग्निरूपतिनसोंसंपूर्णमायावाद
दूरिनयोभस्महोइगयोतहांयहपूर्वपक्षहोइ
जोमायावादकंहकोंनवादलेइकेंदूरिकीयें १७०

यहसंदेहहरिकरिवेकेलीयेंनामकहतहैं।ब्रह्मवाद
निरूपक।१०२।।याकोअर्थ।।ब्रह्मवादजोतामेंसव
वस्तुकहसत्यकह्योहैताबादकहतहैइकेंमायावा
दजोजामेंसबवस्तुमिथ्याकहीहैताकहहरिकीये।
अवश्रागिलोनामकहतहैं।।अप्राकृतखिलाकल्प
भूत।१०३।।याकोअर्थ।।अलौकिकजेआभूखण।
तिनकरिभूषितहैं।सोआयुक्तहैवेअलौकिकआ
भूषणकोनजोव्याससूत्रकेच्यारिअध्यायहैं।प्रमा
णरूप।प्रमेयरूपसाधनरूप।औरफलरूप।तहां
चोथोजेंअध्यायफलतामेंमर्जा अलौकिकफ
लरूपकोनहैं।।जेतहांकहतहैं।।अलौकिकआभू
षणकरिभूषितहैं।श्रीआचार्यजीतहांकोईकहेजो
संकराचार्यादिकरूव्याससूत्रकेचोथेअध्यायमेंअ
पनेमार्गकेफलकहे।तहांकहतहैं।।परिजेसाक
छुश्रीआचार्यजीनिरूपणकीयफलकोतामांति
निरूपणकोईनहीकीये।तातेंअलौकिकआभू
षनकरिश्रीआचार्यजीयुक्तहैं।यहजीताइवेके
हनामकहतहैं।सहजस्मित।१०४।।याकोअर्थ।।भा
वरूपअलौकिकआभूषणजोपहिरेहैं।तातेंभाव
नकोजेविस्मरणहोतहै।तबसहजमंदहास्ययुक्तहो
तहैं।।ताकरिसेवकनकहजोनिपडतहैं।श्रीआ

चार्यजीअलौकिकभावयुक्तहैं।अबकहतहै।श्रीआ
चार्यजीसेवकनकहंसोनाकेकरनवारेहैंयहजीता
इवेकहनामकहतहैं।त्रिलोकीभूषणं।१०५॥या
कोअर्थ॥त्रिलोकीपदकरिसत्वगुणरजोगुणतमो
गुणसहितजेसेवकतेकहियतुहैं।ताएसेसेवक
नकहंशोभाश्रीआचार्यजीकेसंबंधहीकरिहैंऔ
रभांतिनहीं॥यहजीताइवेकहनामकहेजो।त्रिलो
कीभूषण।अबकहतहैं।श्रीआचार्यजीकेचरणा
रविंदकेसंबंधतेंभूमिरूकहंउत्कर्षसिद्धभयोयह
जीताइवेकहनामकहतहै।भूमिभाग्यं।१०६॥या
कोअर्थ॥भूमिकेपूर्णपुण्यफलरूपश्रीआचार्यया
कोअभिप्रायभूमिहैभक्तिनातैं[illegible]ताविषेश्री
आचार्यजीभक्तिमार्गकोप्रगटकीयेतबभूमिक
हंपरमआनंदभयोजोमोकहंपरंश्रीआचार्यजीकी
स्थितिहै।यहजीताइवेकहं॥भूमिभाग्ययहनामक
हे॥अबकहतहैं।सेवकनकहंनिष्कामहोइकेजेआ
पुनोदर्शनताकरिसेवकनकेभाग्यप्रगटपजावनहा
रश्रीआचार्यजीहैं।यहजीताइवेकहनामकहत
हैं।सहजसुंदर॥१०७॥याकोअर्थ॥सेवकनकहं
सहजहीश्रीआचार्यजीस्वरूपकोदर्शनउपजाव
नको[illegible]कारणहैपरितास्तुश्रीआचार्यजीमेंसहज

जी है

राम
१४१

सुंदरताहैकृत्रिमनहीं।यहजं ताइवेकहनामकहत
हैं॥सहजसुंदर।जोयाकरिभक्तनकेभाग्यरूपश्री
आचार्यजीहैं॥यहकहिअवकहतहैं॥भक्तनकहै
श्रीआचार्यजीकेचरणारविंदकीजेरेणुतेइहलो
कसंवंधीपदार्थतिनकीसिद्धकरनवारेहैं।यहज
ताइवेकहनामकहतहैं॥अशेषभक्तसंप्रार्थ्यचर
णाब्जरजोधन॥१०८॥याकोअर्थ॥सेवकनकहंइ
हलोकसंवंधीपदार्थ कोनसेवाकेलीयेस्त्रीपुत्र
धनादिकपरलोकसंवंधीपदार्थ कोनजेठाकुर
कोसंवंधरूपपदार्थतिनकेसिद्धिहोइवेकेलीयें
नामश्रीआचार्यजीकेचरणारविंदकीरजरूपधन
सोमांगनोयाकरियहजनाएजोसबवस्तुसिद्धिहो
इवेकेलीयेंजोमांगनोतोश्रीआचार्यजीकेचरणा
रविंदकीरजमांगनीऔरकछूनमांगनो।यामां
तिश्रीआचार्यजीकेएकसोआठनामकहिअवस
माप्तिकहतहैं।इत्यानंदनिधेःप्रोक्तं।नाम्नांमष्टोत्तरं
शतं॥याकोअर्थ॥श्रीगुसांईजीकहतहैं॥आनंद
समुद्ररूपजेश्रीआचार्यजीतिनकेएकसोआठना
महमजोविठ्ठलनाथजीनेंप्रकर्षकरिनिरूपण
ला कीयेनश्रीआचार्यजीकहआनंदसमुद्रजोकहे
महाअगाधहोइजलसंपूर्णहोइ।निरंतरतरंगछलि

तत्तरंग[illegible]होइ।तामांतिश्रीआचार्यजीहूं मांतिमां
तिरसपूर्णहैं॥ औरतिनमेंभावनकेतरंगउठतहैं
औरसमुद्रमेंजैसेरत्नकेसमूहहोइतामांतिश्री
आचार्यजीमेंभावनकेसमूहहैं यातेंसमुद्रकहे॥
औरश्रीगुसांईजीकहतहैं। हमप्रकर्ष[illegible]करि
नामकहे[illegible]हैं॥ ताकोयहअभिप्रायजोयेपहिलें
नामकहेहैंतिनकहमें। प्रगटकरतहूंनतुकल्पि
तकरिकहतहूं॥ अबकहतहैं। श्रुत्याविसृष्टदुग्ध
दिव्यः पयस्तुहिनिंतनः॥ सततदेकमनाः सिद्धिमक्ष्णा
आमोत्यसंशय॥ याकोअर्थ॥ जोश्रीआचार्यजी
मेंश्रद्धाकरिस्थितहैं अर्थइः संगादिकनम[illegible]का
रिहरितहोइ॥ असीहैबुद्धिजाकी ऐसोजोकोईहै
इ।य[illegible]रिनगवही[illegible]वैसोजोनिरंतरपाठकरेतोप व
तिदि[illegible]श्रीआचार्यजीमे॥ एकमनहोइ। पाछेवाकू
[illegible]अधरामृतकोआस्वादरूपजोसिद्धिताकीप्रा
प्तिहोइ। यहफलहोइसर्वोत्तमकेपाठतें[illegible] यामें
संदेहनकरनों॥ यहप्रतिज्ञाकरतहैं। श्रीगुसांई
जीअबकहतहैं॥ पुष्टिमार्गकोफलमुक्तिहूतें
अधिकहै॥ य[illegible]जोतावतहैं॥ तदभावेचथामोहाल्
दात्रीतकृतार्थता॥ अतः सर्वोत्तमस्तोत्रंजप्यंकृष्ण रा॰
रसार्थिभि॥ याकोअर्थ॥ जोश्रीआचार्यजीकेसहे २४:

वनकहपुष्टीमार्गकेफलकीप्राप्तिनर्हईतोसायु
ज्यादिकजेमुक्तितिनकोपावनोहथा। औरपुष्टी
मार्गकेफलकीप्राप्तिनईं। तोरुस्मायज्यादिक-
अप्रयोजकफलहैकहाकरनोहै। तातैंपुष्टीमा
र्गकोफलसबतेंअधिकहै। सोसर्वोत्तमस्तोत्रको
जपपाठतैंसिद्धहोइ॥ तातैंजिनकहृगाकुरकेअ
धरामृतरसकीवांछाहैं॥ तिनकोंसर्वोत्तमस्तोत्र
कोजपकरनो। ताकोयहअर्थ। जहांतांहिसंदेह
विनापागनआवेतहांताईप्रकारिकैंपाठकरा
नो॥ औरजबमनलीमांतिआवेतबजपकरनोगु
प्तकरि॥ औरयहस्तोत्रपुष्टीमार्गकेफलकोसि
द्धकरनवारोहै॥ याहीतैंयास्तोत्रकोनांमसर्वोत्त
मस्तोत्रनिरंतरजपनो॥ यामांतिश्रीरूपश्रीआ
चार्यजीतिनकेकुमार। श्रीगुसांईजी। यहनांमग्रं
थप्रगटकीये॥ तबश्रीगोकुलनाथजीकहत
हैं॥ एवंआचार्यनामानि बिवृतानि यथामतिः॥
पितृपादाब्जकृपयानान्यसाधनतोमया॥ याको
अर्थ॥ श्रीगोकुलनाथजीकहतहै। यामांतिजैसी
मेरीबुद्धिहतीतातामांतिश्रीगुसांईजीकेचर-
णकमलकेकृपातैंश्रीआचार्यजीकेएकसो
आठनांमनकीटीकामैंकीये औरमोकहकों

२ ३७ ईसाधन नहतो अवकहतहै। यद्यत्रत्रुटिदोषेण।विष्ट
नावन्यथाकृति।।क्षमध्वाचार्यचरणामह्यमायमिति
स्वल २।। याको अर्थ।। श्रीगोकुलनाथजीकहतहैं
जोकजानिकत्रुटकेदोषकरिटीकामेंहमअन्यथा
कीयेहोंहितोश्रीआचार्यजीकेचरणारविंदहम
ऊपरक्षमाकरोसेवककहैं।यहजांनिकेक्षमाकरो
इतनोग्रंथकीसमाप्ति।।इतिश्रीमत्प्रभुवरनैकतान
श्रीवल्लभनविरचितासर्वोत्तमनामस्तोत्रस्यविट्ठ
लिमप्रणी।।श्रीगोपीजनवल्लभायनमः।।शुभमस्तु १२५०
संवत १८१६

श्री हरी।

कवित्त।

१ नंदजू की रानी देखी मथत सुहानी ताहि देखवी के लसन आल याको मयानी है ॥ कंजन से पान मद्धी नपुर मु नक बांधे माखन की छीर हात गात लपटानी है ॥ शेष सनकादि सार पावतन पार जाको आनंद कहत ताकी उपमा सुगानी है ॥ नंद ओ जसोदा के सुख कंद श्री मुकुंद राय मागत है इन्दु व्रज चंद पिक बानी है

२ केसरी टिपारो ताये कत्तरी कछ्य सोहै कुंडल मयूरा चात अखि कर रसाल है ॥ मानीक तिलक नक बेसर झलक मणिहारा की चुबुक कंठ हार वन माल है ॥ मधु काछ साजे नट भेख देख कामलाजै आनंद कहत हसी मंद गति चाल है ॥ चंचल चकोर चित्त चोर मुस्कान मधु मंगल करन मन हरन श्री गोपाल है ॥

२ आलि तेरे दृगन देखि कंजन छिपात जल कुच अवलोकत शिरी मन सकुचात है ॥ ग्रीवा मुख नासा कंठ ताको लखि इन्दु कीर कोकिला कपोत सब अति ही लजात है ॥ बेनी कटि अंग चाल दंत छवि देखि कुंद आल ओर सिंह चंपा गजन हरात है ॥ एरी अलबेली राधो बाधा हरी छाडी चली आनंद बिहारी तहां ठाढे डोहा खात है ॥